प्रेरक प्रसंग

संकलन

सुधा गौतम

गौतम ने प्रस्तुत पुस्तक 'प्रेरक प्रसंग' में अनेक प्रसगों को संकलित किया हैं । महान् पुरुषों के .शिष्ट घटनाओं में से उल्लेख्य हैं **कुछ प्रसंग :**

वाणी

स्वामी विवेकानंद रेल से सफर कर रहे थे । उनके युवक स्वामी जी को अंग्रेजी में लगातार अपशब्द गैर उनका उपहास उड़ा रहे थे । गंतव्य आने पर ली को सामान उठाने और पानी लाने के लिए ले तो युवक घबरा गए । वे बोले, "आप अंग्रेजी र भी इतनी देर आपने हमारी बातों पर गौर करते नहीं कहा ? ऐसा क्यों ?"

नद बोले, "अपशब्द कहने पर वाणी का व्यर्थ ा है और ऊर्जा नष्ट होती है ।"

भाई-भतीजावाद

र हुसैन जब देश के राष्ट्रपति थे, तब उन्हें अपने त्र पत्र मिला । उस पत्र में कोई कार्य करवाने का और इसीलिए संबंधी ने पत्र में बार-बार उनका मुसलमान होने की दुहाई दी । उस पत्र को पढ़कर काफी खिन्न हुए और अपने निजी सहायक से द मेरे संबंधी को यह मालूम नहीं है कि मैं अब हीं रहा, केवल भारतीय हूँ । मै इस पद पर लिए हूँ, भाई-भतीजावाद के पोषण के लिए ाह सज्जन सचमुच अपनी योग्यता का दम भरते मेरी सहायता की क्या जरूरत है ?"

-88123-01-3 मूल्य रु० 80 00

:कालय

....

....

....

प्रेरक प्रसंग

संकलन

सुधा गौतम

ISBN—81-88123-01-3

प्रकाशक
हिमाचल पुस्तक भण्डार
IX/ 221, सरस्वती भण्डार, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण
2001

आवरण
राजीव

मूल्य
अस्सी रुपये

मुद्रक
एस॰एन॰ प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110002

PRERAK PRASANG (Hindi)
Collection by Sudha Gautam
Price Rs 80 00

क्रम

प्रेरक प्रसंग

परीक्षा

मोरारजी देसाई सिविल सर्विस परीक्षा के लिए साक्षात्कार दे रहे थे । साक्षात्कार के अंत में उनसे पूछा गया, "यदि आप चुने नहीं गए तो क्या आप उदास हो जाएँगे ?"

मोरारजी देसाई का उत्तर था, "इसमें उदास होने की कोई बात नहीं है । अभी संसार के अनेक कार्य मेरे सम्मुख हैं ।"

मोरारजी देसाई को बिना किसी सिफारिश के चुन लिया गया ।

□

कीर्ति-स्तंभ

प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु ने अपना सारा जीवन विज्ञान की सेवा में लगा दिया था । शुरू में पाश्चात्य जगत् के वैज्ञानिकों ने उनकी प्रतिभा को पहचाना नहीं, परंतु सत्य कब तक छिपा रह सकता है !

जब सारे विश्व ने उनकी प्रतिभा परख ली तो अपने समय के महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने उनकी प्रशंसा में कहा, "जगदीशचंद्र बसु ने विज्ञान से संबंधित जो नवीन बातें हमारे सामने रखीं तथा जिन तथ्यों का उद्घाटन किया, उनमें से किसी एक के लिए भी उनका कीर्ति-स्तंभ स्थापित किया जा सकता है ।

□

रुचि

एक लड़का फटी-पुरानी कमीज पहने, दो-तीन किताबें लिए कक्षा के बाहर खड़ा था । मास्टर जी चिल्लाए, "तुम फिर लेट आए हो ! वापस चले जाओ !" करीब दो घंटे बाद उनकी नजर बाहर गई तो वह हैरान रह गए । लड़का कहीं नहीं गया था और वह जो पढ़ा रहे थे, उसे ध्यान से सुन रहा था, जबकि कक्षा में बैठे बच्चे पढ़ने में इतनी रुचि नहीं ले रहे थे ।

मास्टर जी ने उसे कक्षा में बुलाया और कहा, "बेटा, कक्षा के बाहर खड़े होकर तुम पढ़ाई में जितनी रुचि ले रहे हो, उतनी रुचि तो कक्षा में बैठे छात्र भी नहीं ले रहे हैं ।"

वह बालक रोज सोलह किलोमीटर पैदल चलकर पाठशाला जाता था । उन्हें आज देश के राष्ट्रपति के०आर० नारायणन के रूप में जाना जाता है ।

□

कम-अधिक

महात्मा गांधी इंग्लैंड की महारानी से मिलने अपनी चिर-परिचित छोटी-सी धोती और सादी चादर में गए थे । इस पर पत्रकारों ने उन्हें घेर लिया और पूछा, "महात्मा जी, आप महारानी से मिलने गए और वह भी इतने कम कपड़े पहनकर ! आपको बुरा नहीं लगा क्या ?"

गांधीजी ने कहा, "इसमें बुरा लगने की क्या बात है ? स्वयं महारानी ने ही इतने कपड़े पहन रखे थे कि वे दोनों के लिए काफी थे ।"

□

शब्दों का जादू

चद्रशेखर और हरि बचपन के मित्र थे । बालक हरि कुछ न कुछ लिखते रहते थे, जो उनके सहपाठी चंद्रशेखर को पसंद नहीं था ।

चंद्रशेखर कहते, "हरि, तुम क्या लिखते रहते हो ?" और वह उसके लिखे शब्दों को मिटा देते ।

एक दिन हरि बोले, "शेखर, तुम जिन शब्दों को शरारत समझकर मिटा रहे हो, याद रखना, एक दिन तुम इन्हीं शब्दों को पढ़ने के लिए तरसोगे ।"

इस बालक को आज हरिवंशराय बच्चन के नाम से जाना जाता है ।

□

बुद्धि और नींद

होमी जहाँगीर भाभा को बचपन में एक बड़ी विचित्र आदत थी । वह बहुत कम सोते थे । उन्हें नींद बहुत कम आती थी । इस बात से उनके माता-पिता काफी चिंतित रहते थे । उन्होंने अनेक चिकित्सकों से बालक का परीक्षण करवाया । उन्हें डर था, कहीं नींद कम आने के कारण उनका स्वास्थ्य खराब न हो जाए ।

अंत में उन्होंने एक प्रसिद्ध मनोचिकित्सक से चैकअप करवाया । डॉक्टर ने बताया कि बालक अत्यंत बुद्धिमान है । इसीलिए दिमाग हर समय कुछ न कुछ सोचता रहता है और नींद कम आती है ।

आगे चलकर यह बालक महान् वैज्ञानिक बना ।

□

भोजन

पतला-सा दिखने वाला आदमी काले कंबल पर बैठा है और उसके पास प्याले में मसले हुए टमाटर और जैतून का तेल रखा हुआ है । पास ही पिचके हुए डिब्बे में मूँगफली और केले के बेस्वाद बिस्कुट रखे हैं ।

यह देखकर सरोजिनी नायडू जोर से हँस पड़ीं । हँसी सुनकर गांधीजी ने उनकी ओर देखा और कहा, "तुम शायद सरोजिनी नायडू हो ! भला और किसकी हिम्मत हो सकती है इस तरह ठहाका लगाने की । आओ, भोजन करो ।"

ऐसी अनोखी थी उनकी पहली मुलाकात ।

□

समय का सदुपयोग

सन् 1920 की बात है । उन दिनों डॉ० भीमराव आम्बेडकर अपनी पढ़ाई के सिलसिले में लंदन गए हुए थे । उन्हें शिक्षा के प्रति इतना लगाव था कि वह जब भी समय मिलता, पुस्तकों में डूब जाते ।

लंदन में उन दिनों अस्नाडेकर के साथ वह एक कमरे में रहते थे । अस्नाडेकर को यह देखकर ताज्जुब होता कि भीमराव हर समय पढ़ते-लिखते रहते हैं ।

एक दिन आधी रात में उनकी नींद टूटी, तो उन्होंने देखा कि वह पढ़ाई में डूबे हुए हैं । उन्होंने पूछा, "आप अब और कितनी देर पढ़ेंगे ? समय बहुत हो गया है, सो जाइए ।"

आम्बेडकर ने गंभीर स्वर में कहा, "अस्नाडेकर साहब, खाने के लिए पैसा और नींद के लिए समय मेरे पास कहाँ है ? मुझे तो एक-एक क्षण का सदुपयोग करना है ।" यह कहकर वह फिर पढ़ाई में तल्लीन हो गए ।

□

पथ-प्रदर्शन

"क्या आपके सभी शिष्य निर्वाण प्राप्त कर लेते हैं ?" एक जिज्ञासु ने गौतम बुद्ध से पूछा ।

"कुछ करते हैं, कुछ नहीं करते ।" बुद्ध ने उत्तर दिया ।

"आप जैसा पथ-प्रदर्शक पाकर भी ऐसा क्यों ?" जिज्ञासु ने प्रश्न किया ।

"यदि कोई पथिक तुमसे राजमहल का मार्ग पूछे, फिर भटक जाए, तो तुम क्या करोगे ?" बुद्ध ने प्रश्न किया ।

"तथागत, मेरा काम केवल रास्ता बताना है । मैं क्या करूँगा ?" जिज्ञासु का उत्तर था ।

"श्रमण, मैं क्या करूँगा ? मेरा काम केवल पथ-प्रदर्शन है ।" बुद्ध का उत्तर था ।

□

हिम्मत

जवाहरलाल नेहरू हवाई जहाज से यात्रा कर रहे थे । कुछ देर बाद जहाज में आग लग गई । लोगों में अफरा-तफरी मच गई । चालक घबरा गया । वह नेहरू जी के पास पहुँचा और बोला, "सर, अब क्या करें, बचना मुश्किल है ।"

नेहरू जी बोले, "डरो मत, जो कर सकते हो, करो ।"

चालक में उन्होंने आत्मविश्वास जगाया और स्वयं पुस्तक पढ़ने लगे । सौभाग्य से चालकों ने हिम्मत से काम लेकर जहाज को एक चरागाह में उतार दिया और सभी बच गए ।

□

बारह वर्ष

वाचस्पति मिश्र का नया-नया विवाह हुआ था। वह एक ग्रंथ लिख रहे थे। लिखने में उन्हें दिन-रात का होश ही नहीं रहता था। रात में दीपक की रोशनी में लिखते रहते। दीपक का तेल खत्म होने पर उसमें तेल कौन डालता है, इसका उन्हें पता भी नहीं चल पाता था।

एक रात लिखते-लिखते उन्होंने सिर उठाकर देखा कि एक स्त्री दीये में तेल डाल रही है। वह बोले, "आप कौन हैं ?"

स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं आपकी पत्नी भामती हूँ।"

वाचस्पति बोले, "अच्छा-अच्छा, तो आप मेरी पत्नी हैं !"

ग्रंथ पूरा होने में बारह वर्ष लग गए। उन्होंने ग्रंथ का नाम ही 'भामती' रख दिया।

□

ईश्वर

एक शिष्य ने गुरुजी से पूछा, "ईश्वर कहाँ है ?"

गुरुजी ने कहा, "सबमें।"

तभी रास्ते पर एक हाथी बेकाबू होकर भागता नजर आया। पीछे-पीछे महावत चिल्ला रहा था, "रास्ते से हट जाओ, हाथी पागल है।"

गुरुजी एक तरफ हो गए, पर शिष्य गुरुजी की बात याद कर रास्ते पर ही खड़ा रहा और सोचने लगा कि जब सबमें ईश्वर है, तो इस हाथी में भी होगा। हाथी चिंघाड़ता हुआ शिष्य के पास आया और उसे सूँड़ से उठाकर दूर झाड़ियों में फेंक दिया। शिष्य को बहुत चोट आई।

गुरुजी उसे देखने गए, तो उसने पूछा, "आपने तो कहा था, ईश्वर सबमें है, फिर ऐसा क्यों हो गया ?"

गुरुजी ने कहा "ईश्वर तो उस महावत में भी था जो हाथी के पीछे पीछे

चिल्लाता आ रहा था कि हट जाओ, हाथी पागल है । तुमने उसकी बात क्यों नहीं सुनी ?"

□

तल्लीनता

आइंस्टीन की पत्नी से पत्रकारों और वैज्ञानिकों ने एक बार आइंस्टीन के बारे में पूछा । उनकी पत्नी ने सापेक्षता के सिद्धांत का किस्सा सुनाया—"एक दिन आइंस्टीन नाश्ते के लिए नीचे उतरे । उन्होंने कुछ नहीं खाया । मैंने समझा, तबीयत खराब होगी ।

मैंने पूछा, 'क्या आपकी तबीयत खराब है ?'

तो वह बोले, 'बड़े गजब का विचार सूझा है,' और कॉफी पीने लगे, फिर वायलिन को छेड़ा, पर रुक गए । बार-बार विचार के बारे में बोलते, फिर रुक जाते । अंततः अध्ययन कक्ष में चले गए । करीब एक हफ्ते तक नीचे नहीं उतरे । थके-माँदे हाथ मेज पर रखकर बोले, 'यह रहा वह ग्रेट आइडिया ।' और वही था उनका सापेक्षता का सिद्धांत ।"

□

परीक्षा

रामकृष्ण परमहंस का नरेंद्र पर असीम स्नेह था, पर उन्होंने नरेंद्र से बोलना बंद कर दिया । नरेंद्र जब भी उनके सम्मुख जाते, वह मुँह फेर लेते, लेकिन नरेंद्र उन्हें रोज प्रणाम करते और देर तक उनके पास बैठे रहते ।

कुछ सप्ताह तक ऐसा ही चलता रहा । एक दिन रामकृष्ण परमहंस ने नरेंद्र से पूछा- "मैं तुमसे बात तक नहीं करता फिर भी तुम प्रतिदिन मेरे पास क्यों आते हो ?"

नरेंद्र ने कहा, "मैं आपसे प्रेम करता हूँ ।"

यह सुनकर रामकृष्ण परमहंस ने नरेंद्र को छाती से लगाते हुए कहा, "अरे, पागल, मैं तो तेरी परीक्षा ले रहा था कि तू उपेक्षा सह सकता है या नहीं ।"

यही नरेंद्र बाद में स्वामी विवेकानंद कहलाए ।

□

समान वेतन

महान् वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु सन् 1884 में कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में भौतिकी के प्राध्यापक के पद पर नियुक्त थे । उस समय के अंग्रेजी शासन में भारतीयों के साथ बड़ा भेदभाव किया जाता था । किसी भी भारतीय प्रोफेसर को यूरोपियन प्रोफेसर की तुलना में दो-तिहाई वेतन दिया जाता था । इससे बसु क्षुब्ध हो गए । उन्होंने कहा, "समान कार्य के लिए समान वेतन दिया जाना चाहिए । मैं वेतन लूँगा तो पूरा, नहीं तो वेतन लूँगा ही नहीं ।"

और उन्होंने पूरे तीन साल वेतन नहीं लिया । आर्थिक तंगी के कारण कलकत्ता का महँगा मकान छोड़कर उन्हें शहर से दूर एक सस्ता-सा मकान लेना पड़ा । कलकत्ता जाने के लिए वह पत्नी सहित स्वयं नाव खेकर हुगली नदी पार करते । पत्नी नाव खेकर वापस ले आती और शाम को बसु को लेने नाव लेकर जाती । इसके बावजूद वह अपने निश्चय से डिगे नहीं ।

अंततः अंग्रेजों को हार माननी पड़ी और उन्हें यूरोपियन प्रोफेसरों के समान वेतन देना स्वीकार कर लिया गया ।

□

पछतावा

गांधीजी ने बिहार के चंपारन में किसानों को एकत्र कर आंदोलन छेड दिया

एक एंग्लो इंडियन ने गांधीजी की हत्या करने की योजना बनाई किसी

व्यक्ति ने उन्हें खबर दे दी । वह रात को बारह बजे उस एंग्लो-इंडियन के घर पहुँच गए । उसने पूछा, "आप कौन हैं ?"

गांधीजी ने कहा, "आपने जिसकी हत्या करने का निश्चय किया है, मैं वही गांधी हूँ । अकेला आया हूँ । मेरे पास कोई हथियार नहीं है । आप अपनी इच्छा पूरी कर लीजिए ।"

एंग्लो-इंडियन शर्म से पानी-पानी हो गया । उसने गांधीजी के चरण पकड़ लिए और क्षमा माँगने लगा ।

□

एक रुपया

विख्यात समाज-सुधारक ईश्वरचंद्र विद्यासागर कहीं जा रहे थे । एक बालक आया और बोला, "एक पैसा दे दो ।"

विद्यासागर बोले, "अगर मैं तुम्हें एक पैसे की जगह एक रुपया दूँ, तो क्या करोगे ?"

बालक ने कहा, "फिर मैं भीख नहीं माँगूँगा ।"

विद्यासागर ने उसे एक रुपया दे दिया ।

कई वर्ष बाद विद्यासागर बाजार में घूम रहे थे, तो एक युवक ने उन्हें प्रणाम किया और कहा, "मैं वही हूँ, जिसे आपने एक रुपया दिया था । उससे मैंने फलों का धंधा शुरू किया और आज मेरी इसी बाजार में दुकान है । आप उसे अपनी चरण-धूलि से पवित्र करें ।"

□

बाबा

नेहरू जी ने हँसते हुए कहा, "मैं तो केवल चाचा हूँ। यह जानकारी तो किसी बाबा से ही मिल सकती है।"

उस प्रश्न का उत्तर डॉ० भीमराव आम्बेडकर ने दिया। उन्हें बाबा साहब कहा जाता है।

□

वाणी

अमेरिका में स्वामी विवेकानंद रेल से सफर कर रहे थे। उनके पास बैठे दो युवक स्वामी जी को अंग्रेजी में लगातार अपशब्द कह रहे थे और उनका उपहास उड़ा रहे थे। गंतव्य आने पर विवेकानंद कुली को सामान उठाने और पानी लाने के लिए अंग्रेजी में बोले तो युवक घबरा गए। वे बोले, "आप अंग्रेजी जानते हैं, फिर भी इतनी देर आपने हमारी बातों पर गौर करते हुए भी कुछ नहीं कहा ? ऐसा क्यों ?"

विवेकानंद बोले, "अपशब्द कहने पर वाणी का व्यर्थ अपव्यय होता है और ऊर्जा नष्ट होती है।"

□

शांत चित्त

शाम का समय था। गांधीजी प्रार्थना कर रहे थे। तभी एक साँप वहाँ आ गया और उनकी ओर बढ़ने लगा। उनके साथी एकदम घबरा गए। इस हलचल के कारण साँप डर गया और गांधीजी की गोद में चढ़ गया। उन्होंने सबको शांत रहने का इशारा कर प्रार्थना जारी रखी। साँप गोद से उतरा और चुपचाप चला गया।

गांधीजी से लोगों ने पूछा, "साँप के चढ़ने पर आपको कैसा लगा ?"

गाधीजी ने उत्तर दिया, "पहले तो मैं घबरा गया, पर बाद में शांत चित्त हो गया। अगर साँप मुझे काट भी लेता, तो मैं कहता कि इसे मत मारो, इसे जाने दो।"

□

सादगी

आइंस्टीन को एक बार बेलजियम की महारानी ने अपने यहाँ आमंत्रित किया। आमंत्रण पर वह ब्रूसेल्स पहुँचे। उनकी सादी-सी वेशभूषा होने के कारण उच्चाधिकारी उन्हें पहचान नहीं पाए।

जब आइंस्टीन अपना बैग उठाए राजमहल पहुँचे और महारानी को अपने आने की सूचना दी, तो महारानी ने उनसे खेद प्रकट किया।

वह बोले, "आप जरा-सी बात के लिए दुःख न करें। मुझे पैदल चलना बहुत अच्छा लगता है।"

□

वफादारी

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु के पिता भगवान चंद्र बसु डिप्टी मजिस्ट्रेट थे। उन्होंने अपने कार्यकाल में कई चोरों और डाकुओं को जेल भेजा था। एक बार एक डाकू जेल से छूटकर उनके पास आया और काम माँगने लगा।

घर के सभी लोग डाकू को काम देने के खिलाफ थे, परंतु उन्होंने उस पर भरोसा कर उसे जगदीशचंद्र बसु को पाठशाला ले जाने और वापस लाने का काम सौंप दिया। उस डाकू ने भी उनके भरोसे को टूटने नहीं दिया और हमेशा पूरी वफादारी से काम किया।

□

क्षमा

एक बार स्वामी विवेकानंद किसी गाँव में प्रवचन देने जा रहे थे। रास्ते में एक दुष्ट व्यक्ति गालियाँ देते हुए उनके पीछे चलने लगा। जब गाँव की सीमा आ गई, तो स्वामी जी रुके और उस व्यक्ति से बोले "देखो भलेमानस जितनी गालियाँ देनी हों यहीं दे लो यदि सभा-स्थल पर गाली दोगे तो हो सकता है वहाँ कुछ लाग

तुम्हें दंड दें और मैं तुम्हें बचा नहीं सका, तो मेरी वजह से तुम्हारी पिटाई हो जाएगी और मुझे पाप लगेगा ।"

वह व्यक्ति स्वामी जी की इस बात से शर्म से झुक गया और क्षमा माँगकर वहाँ से चला गया ।

□

मूल्य

स्वीडन की एक राजकुमारी थी, यूजीन । उसने अपने व्यक्तिगत तथा राजप्रासाद के सभी हीरे, जवाहरात, आभूषण आदि बेचकर एक धर्मार्थ औषधालय खुलवाया ।

औषधालय के सभी लोग बड़े सेवाभावी थे । राजकुमारी स्वयं प्रतिदिन रोगियो की सेवा करने औषधालय आया करती थी । उसकी सेवा व रोगियों के प्रति दयालुता को देखकर एक दिन किसी रोगी की आँखों से आँसू टपक पड़े ।

उन आँसुओं को हाथों में ले राजकुमारी बोली, "अपने हीरे-मोती का सच्चा मूल्य इन आँसुओं में आज मुझे वापस मिल गया ।"

□

ज्ञान

स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस से पूछा, "बहुत-से पंडित अनेक शास्त्रों का पाठ करते है । वेद-पाठ में ही संपूर्ण जीवन बिता देते है । इस सबके बावजूद उन्हें ज्ञान-लाभ क्यों नहीं होता ?"

स्वामी जी ने हँसते हुए उत्तर दिया, "चील, गिद्ध आदि पक्षी उड़ते तो बहुत ऊँचाई पर हैं, लेकिन उनकी दृष्टि पृथ्वी पर पड़े मांस के टुकड़ों पर ही रहती है । ठीक उसी प्रकार वेद-शास्त्रों एवं ग्रंथों का पाठ करने से क्या लाभ होगा ? उनका मन तो हमेशा सांसारिक वस्तुओं की ओर लगा रहता है ।"

□

शर्मदार

सन् 1936 में एक बार जवाहरलाल नेहरू को पटना में एक सभा को संबोधित करने शाम छह बजे पहुँचना था, लेकिन रास्ते में कई सभाओं में भाषण देने के कारण उन्हें देर हो गई । बीच-बीच में आयोजक यह घोषणा करते रहे कि नेहरू जी पहुँचने वाले है और जनता रुकी रही ।

नेहरू जी ने सभा-स्थल पर पहुँचकर भाषण इस प्रकार शुरू किया—"मैं अव्वल दर्जे का बेहया हूँ । शाम छह बजे की जगह रात एक बजे पहुँचा हूँ, लेकिन मुझसे बढ़कर आप बेहया हैं कि जाड़े की रात में इतनी ठंड सहते हुए यहाँ बैठे है ।"

यह सुनते ही सभी हँस पड़े ।

□

सात रुपए

ईश्वरचंद्र विद्यासागर को एक आवश्यक पत्र देने एक डाकिया उनके आवास पर आया । विद्यासागर जी ऊपर की मंजिल पर थे । डाकिया नीचे बैठकर उनका इंतजार कर रहा था । गर्मी के दिन थे । इसी कारण डाकिए को नींद आ गई । जब विद्यासागर जी नीचे आए, तो उन्होंने डाकिए को सोते देखा । उन्होंने चुपके से चिट्ठी ले ली और उसे पंखा झलने लगे । तभी उनके एक परिचित भी पहुँच गए । उन्हें पंखा झलते देखकर हैरानी से बोले, "आप यह क्या कर रहे है ? इसे पंखा क्यों झल रहे हैं ? कहाँ यह सात रुपए वेतन पाने वाला और कहाँ आप !"

विद्यासागर जी बोले, "अरे भाई, मेरे पिताजी ने सात रुपए के वेतन से ही हमारे सारे परिवार को पाला था । वह भी भरी दोपहरी में काम पर जाया करते थे ।"

□

मूलनाश

मगध-नरेश महानंद का सेनापति शकटार राजा के पिता के भोज के लिए ब्राह्मणों की खोज में निकला। उसने रास्ते में एक कुरूप ब्राह्मण को कुश की जड़ों को खोदकर उनमें मट्ठा भरते देखकर पूछा, "हे ब्राह्मण ! आप यह क्या कर रहे हैं ?"

"मैं इसके मूल को ही नष्ट कर दूँगा। इसने मेरे पाँव में चुभकर कष्ट पहुँचाया है।"

यह ब्राह्मण और कोई नहीं, आचार्य चाणक्य थे, जिन्होंने नंद साम्राज्य को समूल नष्ट कर दिया था।

□

आविष्कार

नीदरलैंड के हैंस लिपरशी ऐनकसाज थे। एक दिन उनकी दुकान पर एक युवक आया। यह संयोग ही था कि उसने दो लैंसों को एक-दूसरे के समानांतर रखकर आगे-पीछे किया। ऐसा करने से जब उसे दूर की वस्तुएँ पास दिखने लगीं, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। हैंस भी यह देखकर हैरान रह गए। बाद में उन्होंने दो लैंसों के संयोजन से छोटी-सी दूरबीन बनाई। इस प्रकार दूरबीन का आविष्कार महज आकस्मिक घटना थी।

□

पूजा

स्वामी विवेकानंद एक राजा के मेहमान थे। एक दरबारी ने मूर्ति-पूजा की हँसी उड़ाते हुए पूछा, "महाराज, आप मूर्ति-पूजा के समर्थक हैं या विरोधी ?"

स्वामी जी कुछ देर सोचने लगे फिर उन्होंने दीवार पर लगी हुई राजा की

तस्वीर की तरफ इशारा करके कहा, "उस तस्वीर को उतारकर पैरों से कुचल दो ।"

यह सुनते ही वह व्यक्ति घबराकर बोला, "यह तो हमारे राजा की तस्वीर है ।"

"तस्वीर ही है ना ! राजा तो नहीं है ?" स्वामी जी मुस्कराकर बोले ।

"मगर नहीं, बिलकुल नहीं । तस्वीर का अपमान हमारे राजा का अपमान होगा ।" वह घबराया ।

"यही बात मूर्ति के संदर्भ में भी सत्य मानो । मूर्ति परमात्मा नहीं, लेकिन परमात्मा की ओर मुड़ने का माध्यम तो है । श्रद्धालुओं के लिए यह परमात्मा का ही प्रतीक है ।" स्वामी जी ने कहा ।

□

धारणा

प्रेमचद शांत स्वभाव के व्यक्ति थे । उन्हें कभी क्रोध नहीं आता था, लेकिन एक बार उन्हे किसी व्यक्ति पर गुस्सा आ गया और वह बोले, "क्या कहूं ? मैं आपको एक शरीफ आदमी समझता था, परंतु आप तो···।"

वह व्यक्ति बीच में ही बोल उठा, "जी, मेरी धारणा भी आपके प्रति ऐसी ही थी ।"

प्रेमचंद ने तत्काल व्यंग्य-भरे शब्दों में कहा, "आपकी धारणा तो सच निकली, मै ही धोखे में था ।"

□

गलीचा

लालबहादुर शास्त्री जी के परिवार वालों ने सर्दी के दिनों में ठंड से बचने के लिए एक गलीचा उनके कमरे में बिछा दिया । जब उन्होंने उस गलीचे को देखा तो कहा, "भला इसका इस्तेमाल मैं कैसे कर सकता हूँ खासकर उस हालत म जब उसके

बिना ही मेरा काम चल रहा है ।" यह कहकर उन्होंने तुरंत गलीचा उठवा दिया ।

□

प्राण

राजा अजातशत्रु ने एक बार पशु-यज्ञ का आयोजन किया । हाथ में तलवार लिए हुए बलि देने वाला आदेश का इंतजार कर रहा था, तभी गौतम बुद्ध ने प्रवेश किया । राजा अजातशत्रु ने उन्हें नमस्कार किया ।

तथागत ने उन्हें एक तिनका देकर कहा, "राजन, इसे तोड़कर दिखाइए ।"

अजातशत्रु ने उसे तोड़कर दो टुकड़े कर दिए ।

तथागत ने कहा, "राजन, अब इन टुकड़ों को जोड़ दीजिए ।"

"ऐसा कैसे संभव है भगवन ?" अजातशत्रु ने पूछा ।

तथागत ने कहा, "राजन, जिस प्रकार टूटे हुए तिनकों को जोड़ना संभव नहीं है, वैसे ही अपने पाप को इन निरीह, निर्दोष, मूक प्राणियों की बलि से नहीं मिटाया जा सकता । पशु-हिंसा से तुम्हारे पापों में वृद्धि होगी । जो प्राण हममें है, वही इनमें भी है । प्राणिमात्र को अपने समान समझकर व्यवहार करना धर्म है । जब तुम किसी में प्राण नहीं फूँक सकते, तो तुम्हें किसी के प्राण-हरण का भी अधिकार नहीं है ।"

यह सुनकर अजातशत्रु ने पशुओं को मुक्त कर दिया ।

□

स्वतंत्रता

लार्ड माउंटबेटन भारत छोड़ रहे थे । वह जवाहरलाल नेहरू से मिले और पूछा, "बताओ, भारत को स्वतंत्रता कैसे मिली ?"

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा, "आपका प्रश्न गलत है । भारत को स्वतंत्रता मिली नहीं, उसने प्राप्त की है ।"

□

एक के बराबर

रामानुजन गणित के महान् विद्वान् थे । वह तीसरी कक्षा में थे । एक दिन अध्यापक कक्षा में गणित पढ़ा रहे थे--

"जब किसी संख्या को उसी संख्या से भाग करते हैं, तो वह एक के बराबर हो जाती है ।"

सभी विद्यार्थी समझ रहे थे, लेकिन रामानुजन को दुविधा महसूस हो रही थी । उन्होंने अध्यापक से पूछा, "जब हम शून्य को शून्य से भाग करेंगे, तो वह भी एक के बराबर ही होगा ?"

इस प्रश्न का उत्तर अध्यापक के पास न था । यही बच्चा बड़ा होकर गणित का महान् विद्वान् बना ।

□

जवाब

सर आगा खाँ और एक अमेरिकी पेरिस के एक होटल में खाना खा रहे थे । बातचीत के दौरान वह अमेरिकी भारत के मुसलमानों की बुराई करने लगा । आगा खाँ को यह बड़ा नागवार गुजरा । उनका चेहरा गुस्से से लाल हो गया । कुछ देर बाद अमेरिकी को याद आया कि आगा खाँ भी भारतीय मुसलमान हैं, तो वह क्षमा माँगते हुए बोला, "आप भी मन ही मन सोचते होंगे कि इसे कच्चा खा जाऊँ ।"

सर आगा खाँ ने शांत स्वर में उत्तर दिया, "हमारे मजहब में सूअर का गोश्त खाना मना है ।"

□

अंग्रेज का बाप

आजादी से पूर्व सर सैयद अहमद खाँ और एक अंग्रेज किसी समारोह में मिले। अंग्रेज ने अपना परिचय देते हुए कहा, "मैं जज हूँ।"

अंग्रेज के कहने के ढंग में रोब था। इस बात को ताड़कर सैयद अहमद खाँ ने कहा, "और मैं जज का बाप हूँ।"

अंग्रेज को इस बात का बड़ा बुरा लगा, "इस बात का क्या मतलब ?" उसने गुस्से में माथे पर बल डालते हुए पूछा।

सर सैयद अहमद खाँ ने कहा, "मतलब साफ है, मेरा बेटा जज है।"

और अंग्रेज काफी लज्जित हुआ।

□

जीत

न्यूटन जब पढ़ते थे, तो उनकी कक्षा में एक शैतान लड़का भी था। वह कक्षा का सबसे बुद्धिमान लड़का था। पढ़ाई में वह हमेशा अव्वल रहता था। एक दिन न्यूटन का उस लड़के से झगड़ा हो गया। न्यूटन ने उसे हरा दिया। सभी ने न्यूटन की तारीफ की, लेकिन न्यूटन ने मन में सोचा, अगर मै इस लड़के को पढ़ाई में भी पछाड़ दूँ, तभी मेरी सच्ची जीत होगी।

उस दिन के बाद न्यूटन जी-जान से पढ़ाई में जुट गए। जब परीक्षा का परिणाम निकला, तो न्यूटन के उस लड़के से भी ज्यादा अंक आए।

□

विरोध

पंडित ———— नेहरू जब छोटे थे तो एक दिन उन्हें पता चला कि उनका भाई या बहन इस घर में आने वाला है तो उनकी प्रसन्नता की सीमा न रही वह आनद

भवन के बरामदे में बैठकर शुभ समाचार का इंतजार करने लगे ।

काफी समय बाद डॉक्टर ने हँसते हुए बाहर आकर कहा, "मिस्टर, तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए कि तुम्हारी बहन हुई है, भाई नहीं, जो तुम्हारी संपत्ति का हिस्सेदार बनता ।"

नेहरू जी के दिल को ठेस लगी । तुरंत ही चिल्लाकर कहा, "मैं इतना कमीना नहीं हूँ डॉक्टर साहब !"

बालक का रोषपूर्ण उत्तर सुनकर डॉक्टर भी हैरान रह गया ।

□

कायरता

पंडित जवाहरलाल नेहरू को कायरता से बड़ी घृणा थी । एक बार जब वह कुरुक्षेत्र में पाकिस्तान से आए विस्थापितों से मिलने गए, तो कुछ बेघर लोगों ने उनके सामने अपनी शिकायतें सुनानी चाहीं । वे उनकी कार के आगे लेट गए ।

पंडित जी ने कार रोक दी और नीचे उतरकर लेटे हुए लोगों में से एक को दो थप्पड़ दे मारे । बाद में उन्होंने अपने भाषण में कहा, "आज जब मैं यहाँ आया, तो कुछ लोग मेरी कार के आगे लेट गए । यह मुझे बिलकुल पसंद नहीं । इस प्रकार कार के आगे लेटना हद दर्जे की कायरता है । अगर कोई शिकायत है, तो मेरे पास आइए, मैं आपकी बात सुनूँगा, पर इस तरह की कायरता मैं कभी सहन नहीं करूँगा ।"

□

विदेशी गुड़िया

इंदिरा गांधी जब बच्ची थीं, तब देश में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार आंदोलन पूरे जोरों पर था इस बच्ची ने भी विदेशी वस्त्र पहनना छोड दिया था एक दिन किसी

रिश्तेदार ने टोका, "जब तुम विदेशी फ्रॉक नहीं पहनतीं, तब फिर विदेशी गुड़िया से क्यों खेलती हो ?"

बच्ची को यह बात चुभ गई और उसने अपनी सबसे प्यारी गुड़िया को छत पर ले जाकर जला डाला ।

□

शांति

एक व्यक्ति स्वामी विवेकानंद से मिलने आया । वह अपने जीवन में शांति न मिलने पर निराश था ।

"स्वामी जी, मैं कोठरी में दरवाजा बंद करके बैठा रहता हूँ, किंतु शांति किसी भी तरह नहीं मिलती । क्या आप कोई उपाय बताएँगे ?" वह व्यक्ति बोला ।

स्वामी विवेकानंद बोले, "यदि तुम मेरी बात मानो, तो सबसे पहले तुम्हें अपनी कोठरी का दरवाजा खुला रखना होगा । तुम्हारे आसपास सैकड़ों गरीब और बेसहारा लोग होंगे, उनकी तुम यथासाध्य सेवा करो । जो भूखे हैं, उन्हें भोजन कराओ । जो रोगी हैं, उन्हें औषधि दो । जो निरक्षर हैं, उन्हें पढ़ाओ । मैं समझता हूँ, इतना सब करने पर तुम्हारे मन को अवश्य शांति मिलेगी ।"

□

तलाश

रामकृष्ण परमहंस ने एक दिन नरेंद्रनाथ से कहा, "मेरे पास अष्ट सिद्धियाँ हैं, तू लेगा ?"

नरेंद्र ने पूछा, "क्या इन सिद्धियों से मुझे ईश्वर के साथ साक्षात्कार में सहायता मिलेगी ?"

"नहीं, वह तो नहीं होगा, फिर भी तुझे और कामों में उनसे सहायता मिलेगी ।" वह बोले

नरेंद्रनाथ ने साफ मना कर दिया, "तब मुझे नहीं चाहिए ।"

नरेंद्रनाथ सांसारिक सुखों के पीछे नहीं भागते थे । उन्हें सत्य की तलाश थी ।

□

बहस

पंडित जवाहरलाल नेहरू और एक व्यक्ति के बीच किसी विषय पर बहस हो गई । वह बार-बार यह जताने का प्रयास कर रहा था कि उनके विचार गलत हैं, पर उसे सफलता नहीं मिल रही थी । अंत में हारकर उसने कहा, "पंडित जी, आप शायद भूल रहे हैं कि हर समस्या के दो पहलू हुआ करते हैं, एक गलत और एक सही ।"

नेहरू जी ने तपाक से उत्तर दिया, "अच्छा, तो महज इसीलिए आप गलत पहलू का समर्थन कर रहे हैं ।"

यह सुनकर वह बेचारा चुप हो गया ।

□

कष्ट के प्रति

रामकृष्ण परमहंस के गले का घाव काफी बढ़ गया था । दूध पीना भी असंभव-सा हो गया, तो व्याकुल होकर नरेंद्रनाथ सहित सारे शिष्यों ने स्वामी जी से आग्रह किया कि काली माँ से यह व्याधि दूर करने के लिए कहें ।

बाद में उनसे पूछा, तो कहने लगे, "मैंने व्याधि दूर करने के लिए तो नहीं कहा, हाँ, यह कहा था कि गले के कारण खा-पी नहीं सकता, कष्ट होता है,… लेकिन माँ तो सुनकर हँस पड़ीं । तुम लोगों की तरफ इशारा करके बोलीं, 'तू इतने मुखों से खाता तो है, उससे तृप्त नहीं होता ?' मैं लज्जित होकर रह गया ।"

□

अच्छाई और बुराई

एक बार एक आदमी प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइंस्टीन के पास गया और किसी व्यक्ति की बुराई करने लगा । आइंस्टीन ने गंभीर होकर उसकी बात सुनी और कहा, "मैं उस आदमी को जानता हूँ । वह इतना दुष्ट नहीं हो सकता । वह गुलाब के फूलों से प्यार करने वाला है । मैंने उसे पौधों को पानी देते भी देखा है । पेड़ और फूलों से प्यार करने वाला आदमी बुरा नहीं हो सकता ।"

□

शादी

अंतर एशियाई सम्मेलन में आए तिब्बती प्रतिनिधि दिल्ली में बापू से भेंट करने पहुँचे । उन्होंने अनेक वस्तुएँ बापू को उपहारस्वरूप दीं । इनमें दो पट्टियाँ भी थीं ।

बापू ने पूछा, "ये कहाँ की बनी है ?"

उत्तर मिला, "चीन की ।"

बापू ने पुनः प्रश्न किया, "चीन में सिर्फ बुनी गई हैं या सूत भी वहीं कता है ?"

उत्तर मिला, "सूत भी वहीं कता है ।"

बापू ने परिहास-भरे स्वर में कहा, "चीन की वह कौन-सी लड़की है, जो इतना महीन सूत कातती है । उसे ढूँढ़ लाओ । यद्यपि अब मेरी अवस्था शादी करने की नहीं है, फिर भी इतना महीन सूत कातने वाली लड़की से तो मैं शादी कर लूँगा ।"

तिब्बती प्रतिनिधि हँसते-हँसते लोटपोट हो गए ।

मजबूरी

चाहा, तो उसने बताया, "बात दरअसल यह है कि जर्मन लोग हम अंग्रेजों को पसंद नहीं करते । इसलिए मैं जर्मनी नहीं जा सकता ।"

श्रीमती जिन्ना ने निर्भीकता से कहा, "तो आप अंग्रेज लोग भारत कैसे चले आए ? हम लोग ही कौन-सा आपको पसंद करते हैं ।"

□

संकट में आराम

अहमदाबाद नगर को बाढ़ ने घेर लिया । आधी रात को सरदार पटेल ने भारी वर्षा और आँधी के बीच हरिलाल कापड़िया के घर का दरवाजा खटखटाया, तो वे सरदार को देखकर चकित रह गए । दोनों नगरवासियों को बाढ़ से बचाने के लिए निकल पड़े ।

काफी देर तक वर्षा में भीगने के बाद सरदार को कार्यकर्ताओं ने सलाह दी, "थोड़ी देर आराम कर लीजिए, हम सब तो हैं यहाँ ।"

"आराम ! जब तक नगर के लोग संकट में घिरे रहेंगे, क्या मुझे एक क्षण भी आराम मिल पाएगा ?" सरदार ने गंभीरता से कहा ।

□

तिरस्कार का सम्मान

महात्मा ज्योति बा फुले दंपती ने एक बच्चा गोद लिया था । बच्चा ब्राह्मण बाल-विधवा काशीबाई का था ।

सन् 1855 की बात है । काशीबाई गर्भवती हो गई । वह सावित्री बाई फुले के बाल-विधवा प्रसूतिगृह में आई, तो उसकी हालत चिंताजनक थी । प्रसव के बाद जच्चा-बच्चा को ठीक देखकर सावित्री बाई को बहुत खुशी हुई । काशीबाई ने फूट-फूटकर रोते हुए कहा "मैं बहुत पापी हूँ आपने मुझे अभिशाप से मुक्त करा

दिया । मैं अपना सुंदर-सलोना बच्चा आपकी गोद में डालकर समाज के तिरस्कार की वजह से अन्यत्र चली जाऊँगी ।"

यह व्यथा सुनकर सावित्री बाई ने उसे ढाढ़स बँधाया और बच्चा गोद ले लिया । बच्चे का नाम विधिपूर्वक यशवंत रखा गया । बच्चे ने बड़े होकर सत्य सेवक समाज व इससे संबंधित संस्थाओं का बड़ी सूझबूझ के साथ संचालन किया ।

□

सेवा-व्रत

सन् 1897 में भारत में महामारी का प्रकोप हुआ । स्वामी विवेकानंद ने देश-सेवा-व्रती संन्यासियों की एक छोटी-सी मंडली बनाई । यह मंडली तन-मन से दीन-दुखियों की सेवा करने लगी । ढाका, कलकत्ता, मद्रास आदि में सेवाश्रम खोले गए । वेदांत के प्रचार के लिए जगह-जगह विद्यालय स्थापित किए गए । कई अनाथालय भी खोल दिए गए ।

ये सभी कार्य स्वामी जी के निरीक्षण में हो रहे थे । उनका स्वास्थ्य काफी बिगड़ गया था, फिर भी वह स्वयं घर-घर घूमकर पीड़ितों को आश्वासन तथा आवश्यक सहायता देते रहते थे । जिन मरीजों को देखकर डॉक्टर भी भाग जाते थे, उनकी सहायता करने में स्वामी जी और उनके अनुयायी कभी पीछे नहीं हटे ।

□

अपना बादशाह

मुंशी प्रेमचंद हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कथाकार एवं उपन्यास-लेखक थे । जब वह एक सामान्य स्कूल में शिक्षक थे- तब एक बार एक इंस्पेक्टर विद्यालय के निरीक्षण के लिए पधारे प्रेमचंद ने पूरी विनम्रता और कायदे से उन्हें स्कूल दिखाया

एक दिन शाम के समय प्रेमचंद अपने घर के बाहर बैठे कुछ लिख रहे थे। अचानक इंस्पेक्टर उसी मुहल्ले से निकले। दोनों की नजरें मिलीं, फिर प्रेमचंद अपने लेखन में जुट गए। इंस्पेक्टर उनकी बेरुखी से नाराज हो गए। उन्होंने सोचा था कि प्रेमचंद उठकर उनकी आवभगत करेंगे, परंतु ऐसा नहीं हुआ।

दूसरे दिन उन्होंने प्रेमचंद को बुलाकर रोब डालना चाहा, तो उन्होंने कहा, "महोदय, विद्यालय के समय में मै स्कूल और आपका नौकर हूँ। उसके बाद घर मे मैं अपना बादशाह हूँ। आप घर आते, तो मैं आपकी आवभगत करता, लेकिन मै अपने लेखन-कार्य में व्यस्त था। देवी सरस्वती की आराधना कर रहा था। उस समय जरूरी नहीं कि मैं लोगों का अभिवादन करता फिरूँ।"

□

ईश्वर के दर्शन

स्वामी विवेकानंद जी ने पहली बार जब अपने गुरु के दर्शन किए, तो उसका वर्णन उन्होंने ऐसे किया—देखने में वह बिलकुल साधारण आदमी मालूम होते थे। उनके रूप में कोई विशेषता नहीं थी। बोली बहुत सरल और सीधी थी। मैंने मन में सोचा कि क्या यह संभव है कि यह सिद्ध पुरुष हों ? मैं धीरे-धीरे उनके पास पहुँचा और उनसे प्रश्न पूछा, जो मैं अकसर औरों से पूछा करता था, "महाराज, क्या आप ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं ?"

"हाँ।" उन्होंने जवाब दिया।

"क्या आप उसका अस्तित्व सिद्ध कर सकते हैं ?" स्वामी जी ने अगला प्रश्न पूछा।

"हाँ।" उन्होंने कहा।

"कैसे ?" स्वामी जी ने फिर पूछा।

"मैं उसे ठीक वैसे ही देखता हूँ, जैसे तुम्हें।" उनके गुरु ने जवाब दिया।

□

दोषमुक्त

एक बार भगवान् बुद्ध पावा नगरी पहुँचे । वहाँ मल्ला समुदाय के लोगों ने उनका अभूतपूर्व स्वागत किया । चुंद ने अपने आम्रवन में विश्राम करने के लिए आमंत्रित किया, जिसे तथागत ने सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

चुंद के घर भगवान् तथा भिक्षु संघ ने भोजन भी प्राप्त किया । जो भोजन तथागत के लिए परोसा गया, उसमें सूअर का मांस भी था । उसे खाते ही तथागत अतिसार से पीड़ित हो गए और उनकी दबी हुई बीमारी भी उभर आई ।

चुंद तथागत को विदा करने इरावती नदी के पार तक आया । सरोवर तट पर आम्रवन में तथागत ने कुछ समय आराम किया और कुशीनारा की ओर चले । कुछ देर बाद उन्होंने अपने प्रिय शिष्य से कहा, "आनंद, लोग चुंद को दोष देंगे कि उनके घर भोजन प्राप्त करने के कारण तथागत अस्वस्थ हो गए थे । वस्तुतः ऐसा नहीं है आनंद, चुंद ने जो भी भिक्षा में दिया, सब स्नेहवश ही दिया । इसलिए उसे दोष मत देना । वह दोषमुक्त है ।" तथागत बोले ।

□

उपहार

गांधीजी को दक्षिण अफ्रीका के दमनकारी तानाशाह जनरल स्मट्स ने बार-बार जेल भेजा । गांधीजी ने जेल में एक मोची से जूते बनाना सीखा । जब गांधीजी को रिहा किया गया, तो उन्होंने एक पैकेट स्मट्स को भेंट किया ।

"क्या इसमें कोई बम है ?" कहते हुए स्मट्स ने पैकेट खोला ।

गांधीजी ने कहा, "यह मेरी तरफ से आपको विदाई का उपहार है ।" उसमें गांधीजी के बनाए हुए सैंडिल थे ।

वर्षों बाद गांधीजी के जन्मदिन पर जनरल स्मट्स ने उन्हें पत्र लिखा—मैंने उन सैंडिलों को गर्मियों के दौरान पहना, हालाँकि मैं महसूस करता हूँ कि मैं उन्हें पहनने का पात्र नहीं हूँ

□

मुक्ति

रामकृष्ण परमहंस के पास एक उत्साही युवक आया और उनके चरणों में झुककर प्रणाम करने लगा, "महात्मन ! मुझे अपना चेला बना लीजिए । मुझे गुरु-मंत्र की दीक्षा दीजिए ।"

परमहंस मुस्करा उठे । उन्होंने पूछा, "नवयुवक, तुम्हारे परिवार में कौन-कौन हैं ? क्या तुम अकेले हो ?"

युवक ने उत्तर दिया, "महाराज, घर-बार में और तो कोई नहीं, बस, एक बूढ़ी माँ है ।"

परमहंस थोड़ा क्रुद्ध हो गए । उन्होंने युवक से पूछा, "तुम मुझसे गुरु-मंत्र लेकर साधु क्यों बनना चाहते हो ?"

युवक बोला, "मैं इस मोह-माया से भरे संसार से मुक्ति चाहता हूँ ।"

रामकृष्ण परमहंस ने कहा, "अपनी बेसहारा माँ को असहाय छोड़कर तुम्हें मुक्ति नहीं मिलेगी । तुम्हारी सच्ची मुक्ति तो इसी में है कि तुम पूरी शक्ति और इच्छा से अपनी बूढ़ी माँ की सेवा करो । इसी में तुम्हारा सच्चा कल्याण है । संभवतः इसी मार्ग पर चलकर तुम्हें मुक्ति भी मिल जाए ।"

□

विनम्रता

बंगाल के सुप्रसिद्ध विद्वान् ईश्वरचंद्र विद्यासागर गर्मी की छुट्टियाँ बिताने अपने गाँव गए । वह रेल की तीसरी श्रेणी में सफर कर रहे थे । स्टेशन पर जब वह उतरे, तो उन्होंने देखा कि एक विद्यार्थी, जो उनके ही डिब्बे से उतरा था, सामान उठाने के लिए 'कुली-कुली' चिल्ला रहा था । विद्यासागर जी ने सोचा, इसे यहाँ कुली कहाँ मिलेगा । फिर कुछ सोचकर वह उसके पास गए और उसका सूटकेस उठाकर कहा, "चलिए ।" और छात्र को उसके घर पहुँचा दिया । जब विद्यार्थी ने पैसे देने चाहे तो उन्होंने इनकार कर दिया

शाम के समय पं० ईश्वरचंद्र विद्यासागर के सम्मान में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। हजारों लोग आए। उनमें वह विद्यार्थी भी आया। सभा के बाद वह ईश्वरचंद्र जी के पास पहुँचा और अपना सिर उनके चरणों में रखकर माफी माँगने लगा।

□

देशभक्ति

जापान में भारत के विख्यात तत्त्वचिंतक स्वामी रामतीर्थ रेल-यात्रा कर रहे थे। वह एक स्टेशन पर उतरकर प्लेटफॉर्म पर चक्कर लगा रहे थे और बहुत परेशान थे। एक जापानी, भारतीय साधु की परेशानी से चिंतित हो उठा और पूछा, "महोदय, क्या बात है ? आप इतने परेशान क्यों हैं ?"

भारतीय साधु ने कहा, "यह कैसा देश है, जहाँ खाने के लिए फल खरीदने चाहो, तो मिलते नहीं।"

जापानी यात्री ने घड़ी देखी। ट्रेन छूटने में कुछ समय शेष था। वह स्वामी जी से बोला, "महाशय, मैं अभी आता हूँ।"

फिर कुछ ही मिनट में जापानी यात्री फलों से भरी टोकरी ले आया और स्वामी जी को सौंप दी। रामतीर्थ प्रसन्न हुए और बटुआ निकालकर पूछा, "इनकी कीमत कितनी है ?"

जापानी यात्री ने कहा, "कुछ नहीं, केवल इतना ही, कभी भविष्य में यह बात मत कहिएगा कि हमारे देश में फल नहीं मिलते।"

स्वामी जी का मुँह जापानी यात्री के स्वाभिमान ने बंद कर दिया था।

□

बंदरघुड़की

स्वामी विवेकानंद एक बार काशी की एक तंग गली से गुजर रहे थे कि बंदरों के समूह से उनका सामना हो गया। बंदर गुर्राए तो स्वामी जी घबरा गए। वह चिल्लाकर पीछे हटने लगे कि बंदर उन पर टूट पड़े और उनके कपड़े फाड़ दिए। स्वामी जी भागने लगे तो बंदर किलकारियाँ मारते हुए पीछा करने लगे।

इतने में दूर खड़े एक आदमी ने स्वामी जी को हिम्मत बँधाई और कहा, "डरो मत, हिम्मत से काम लो। बंदरों का मुकाबला करो, इन्हें आँखें दिखाओ, ये स्वयं ही डर जाएँगे।"

उस व्यक्ति की सलाह पर विवेकानंद ठहर गए। उन्होंने हुंकार लगाई और बंदरों को ललकारा। स्वामी जी के रौद्र रूप को देखकर बंदर भाग गए।

□

आपको बदल दूँगा

नेपोलियन बोनापार्ट समय की कीमत अच्छी तरह जानते थे। वह अपनी घड़ी का अध्ययन इस प्रकार किया करते थे, जैसे युद्ध के नक्शे का।

एक बार उनका एक मंत्री निर्धारित समय से दस मिनट लेट आया। देर से आने का कारण पूछने पर मंत्री बोला, "श्रीमान्, मेरी घड़ी दस मिनट लेट है। इसलिए आने में विलंब हो गया।"

नेपोलियन ने जवाब दिया, "अच्छा हो, आप अपनी घड़ी बदल दें, अन्यथा मैं आपको बदल दूँगा।"

□

शौर्य का इनाम

कप्तान जॉन कैलेंडर संयुक्त राज्य अमेरिका की सेना में एक सैनिक अधिकारी थे। एक लड़ाई में शत्रु के सम्मुख उन्होंने बड़ी कायरता दिखाई।

अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन ने इस अधिकारी के विरुद्ध फौजी अदालत द्वारा कोर्ट मार्शल का आदेश दिया। कप्तान जॉन कैलेंडर ने अपने कप्तान पद से इस्तीफा दे दिया। वह फौज में पुनः एक सामान्य सिपाही के रूप में भर्ती हो गए और अगली ही लड़ाई में अपूर्व साहस और वीरता का प्रदर्शन किया। राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन प्रसन्न हो गए। उन्होंने कैलेंडर को न केवल क्षमा किया, वरन् उन्हें पहले पद पर नियुक्त कर दिया।

□

सभ्यता

फ्रांस में पहले राजतंत्र था। उस समय वहाँ पर हेनरी चतुर्थ का शासन था। एक बार वह अपने राज्य के अधिकारियों के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक भिक्षु खड़ा था। भिक्षु ने बड़े आदर से टोप उतारा और सिर झुकाकर सम्राट् का अभिवादन किया। उन्होंने भी उसी प्रकार सिर को झुकाकर उसके नमस्कार का उत्तर दिया। यह देखकर एक अधिकारी बोला, "सर, क्या एक गरीब भिखारी को इस प्रकार का अभिवादन ठीक है ?"

फ्रांस के सम्राट् हेनरी चतुर्थ ने उत्तर दिया, "सभ्यता झूठे बड़प्पन या अहंकार में नहीं, विनम्रता में है।"

□

वीणा के तार

महात्मा बुद्ध ज्ञान-प्राप्ति के लिए घर-बार छोड़कर तपस्या कर रहे थे । तपस्या में उन्हे छह साल लगे, परंतु उनकी तपस्या सफल नहीं हुई ।

एक दिन वह वृक्ष के नीचे समाधि में बैठने की कोशिश में थे, परंतु उनका चित्त उद्विग्न था । तभी कुछ महिलाएँ नगर से लौट रही थीं । वे समवेत स्वर में गीत गा रही थीं । उस गीत के बोल थे—वीणा के तार ढीले मत छोड़ो, ढीला छोड़ने से उनका स्वर सुरीला नहीं निकलेगा, परंतु तार इतने अधिक कसो भी नहीं कि टूट जाएँ ।

यह बात सिद्धार्थ को जँच गई । उन्हें प्रतीत हुआ कि वीणा के तारों के लिए जो बात ठीक है, वह शरीर के लिए भी ठीक होगी । न तो अधिक आहार ठीक है और न ही बहुत न्यून । नियमित मध्यम आहार-विहार से ही योग सिद्ध हो सकता है ।

□

संतोष

आंध्र प्रदेश के खम्माम जिले के माल्लेपालंली की बात है । दिन-भर पढ़ने के बाद एक चौदह वर्ष का बालक घर वापस आ रहा था । रास्ते में उसने देखा कि भारी भीड जमा थी । एक औरत कुएँ के पास खड़े होकर चीख-पुकार कर रही थी । मालूम हुआ कि उसका चार वर्षीय बेटा कुएँ में गिर गया था । कोई उसकी मदद नही कर रहा था । कुआँ दस मीटर गहरा था । उस चौदह वर्षीय बालक ने अपना बस्ता उतारा और एक पतली रस्सी के सहारे कुएँ में उतर गया । उसने बच्चे को बचा लिया । उस बालक को यही संतोष था कि उसने संकट की घड़ी में एक माता की मदद की है ।

□

सम्मान

सिकंदर के आक्रमण के विरुद्ध भारत का हर व्यक्ति अपना उग्र रोष प्रत्येक दृष्टि से प्रकट करने के लिए तत्पर था । उसके विरुद्ध एक भारतीय राजा को भड़काने वाले ब्राह्मण से यवनराज सिकंदर ने पूछा, "तुम क्यों इस राजा को मेरे विरुद्ध भड़काते हो ?"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "मैं चाहता हूँ, यदि वह जिए तो सम्मान से जिए वरना सम्मान के साथ मर जाए ।"

□

सहिष्णुता

ज्योर्दानो ब्रूनो का जन्म सन् 1548 में इटली में हुआ था । उन्होंने एक खगोल वैज्ञानिक निकोलस कोपर्निक्स के विचारों का समर्थन किया था । वह भी उस समय, जब लोग धर्म के प्रति अंधे थे । निकोलस ने कहा, "ब्रह्मांड का केंद्र पृथ्वी नहीं, सूर्य है ।"

ज्योर्दानो ने कहा, "आकाश सिर्फ उतना ही नहीं है, जितना हमें दिखाई देता है । वह अनंत है और उसमें असंख्य विश्व हैं । धर्म वह है, जिसमें सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता हो, विभिन्न धर्मों के अनुयायी आपस में एक-दूसरे के धर्म के बारे में खुलकर चर्चा कर सकें ।" उनकी बातों से धार्मिक कट्टरपंथी विरुद्ध हो गए । उन्हें धर्म के प्रति बातें करने के लिए दोषी पाया गया और 8 फरवरी, 1600 में उन्हें मृत्युदंड दिया गया, लेकिन उनकी कही हुई धार्मिक सहिष्णुता की बात आज के समय में अधिक उपयोगी है ।

□

पाँच रुपए

स्वामी रामतीर्थ जब बी०ए० की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे, तब उनके पास परीक्षा-शुल्क के लिए पूरे रुपए नहीं थे। बहुत कोशिश करने पर भी पाँच रुपए की कमी रह गई। वह उदास-से चंदू हलवाई की दुकान के सामने से गुजरे, तो उसने उन्हें बुलाकर उदासी का कारण पूछा। कारण जान लेने के बाद उसने उसी समय उन्हें पाँच रुपए दे दिए। अपनी अद्वितीय प्रतिभा और गणित विषय में शत-प्रतिशत अंक पाकर रामतीर्थ गणित के प्रोफेसर बन गए और वह हर महीने पाँच रुपए चंदू हलवाई को भेजने लगे।

एक दिन वह फिर उसी हलवाई की दुकान के सामने से गुजरे। उसने बड़ी विनम्रता से कहा, "अब आप दूध पीने नहीं आते। आपके द्वारा मनीऑर्डर से भेजे पैंतीस रुपए मेरे पास जमा हो गए हैं।"

रामतीर्थ ने उत्तर दिया, "यह सब तो आपके उन पाँच रुपयों के बदले में है। वे मुझे मौके पर न मिलते, तो मैं इस स्थिति में कभी नहीं पहुँचता।"

□

परिचय

एक बार स्वामी रामतीर्थ अमेरिका की यात्रा पर थे। बंदरगाह समीप आ रहा था। हर कोई अपना सामान इकट्ठा करने लगा, लेकिन स्वामी जी वैसे ही बैठे रहे। तटस्थ भाव से लोगों को अपना-अपना सामान इकट्ठा करते हुए देखते रहे। बंदरगाह आया और जहाज तट पर जा लगा। सैकड़ों लोग अपने-अपने रिश्तेदारों और मित्रों का स्वागत करने के लिए आए हुए थे। स्वामी रामतीर्थ अब भी शांत और मौन बैठे रहे। इतने में एक अमेरिकी युवती आई। उसने पूछा, "आप कहाँ से आए हैं और कौन हैं ?"

स्वामी जी ने उत्तर दिया, "मैं हिंदुस्तान का फकीर हूँ।"

"क्या आपके पास यहाँ ठहरने के लिए पैसा है या आपका यहाँ किसी से

परिचय है ?" लड़की ने पूछा ।

"नहीं, मेरे पास कोई धन-संपत्ति नहीं है । हाँ, मेरा परिचय अवश्य है ।"

"किससे ?" लड़की ने पूछा ।

"आपसे और थोड़ा भगवान् से ।"

"तो फिर आप मेरे घर चलेंगे ?"

"अवश्य चलूँगा ।"

और स्वामी रामतीर्थ इस भद्र महिला के यहाँ ठहर गए ।

□

ऐसा करूँगा

बाल गंगाधर तिलक अपने साथियों के साथ छात्रावास की छत पर बैठे गपशप कर रहे थे । तभी साथियों के सामने यह सवाल आया कि यदि अचानक किसी पर संकट आ जाए, तो उसकी रक्षा के लिए नीचे जल्दी से जल्दी जाने के लिए कौन, कैसे जाएगा ?

पहला लड़का बोला, "मैं सीढ़ियों से दौड़ता हुआ निकल जाऊँगा ।"

दूसरे ने कहा, "मैं रस्सी लगाकर नीचे उतर जाऊँगा ।"

एक ने पूछा, "तिलक, तुम संकट की घड़ी में क्या करोगे ?"

बाल गंगाधर ने अपनी धोती कसी और बड़ी सावधानी और कुशलता से, "मैं ऐसा करूँगा," कहकर नीचे छलाँग लगा दी ।

यही बालक आगे चलकर अपने साहसी गुणों के कारण लोकमान्य के रूप में प्रसिद्ध हुआ ।

□

दया और प्रीति

पाडवों की ओर से श्रीकृष्ण दूत बनकर कौरवों की राजधानी हस्तिनापुर पहुँचे। वहाँ उनका राजसी सम्मान हुआ और उन्हें भोजन के लिए निमंत्रित किया गया। उन्होंने निमत्रण अस्वीकार कर दिया, तो दुर्योधन बोला, "जनार्दन, आपके लिए अन्न, जल, वस्त्र तथा शय्या आदि जो वस्तुएँ प्रस्तुत की गई हैं, आपने उन्हें ग्रहण क्यों नही किया ? आपने हमारी प्रेमपूर्वक समर्पित पूजा स्वीकार क्यों नहीं की ?"

श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया, "भोजन के लिए दो भाव काम करते है। एक दया, दूसरा प्रीति। दया दीन को दिखाई जाती है, सो दीन तो हम हैं नहीं। हम जिस कार्य के लिए आए हैं, पहले वह सिद्ध हो जाए, तो हम भोजन भी कर लेंगे। आप अपने ही भाइयों से द्वेष क्यों करते हैं ? आप हमें क्या खिलाएँगे ! उनका पक्ष धार्मिक है, आपका अधार्मिक। जो उनसे द्वेष करता है, वह हमसे भी द्वेष रखता है। एक बात सदा याद रखो, जो द्वेष करता है, उसका अन्न कभी मत खाओ। द्वेष रखने वाले को खिलाना भी नहीं चाहिए।"

श्रीकृष्ण ने दुर्योधन का कुछ भी स्वीकार नहीं किया, जबकि हितैषी विदुर का सादा और रूखा-सूखा भोजन स्वीकार किया।

□

आत्मदीप

महात्मा बुद्ध ने सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, सेवा और लाभ से परिपूर्ण जीवन बिताया। जब वह अंतिम यात्रा निर्वाण के लिए प्रस्तुत हुए, तो उनका प्रिय शिष्य आनद रोने लगा। वह बोला, "तथागत, आप क्यों जा रहे है ? आपके निर्वाण के बाद हमें कौन सहारा देगा ?"

महात्मा बुद्ध ने कहा, "अभी तक तुमने मुझसे रोशनी ली है। भविष्य में तुम आत्मदीप बनकर विचरण करो। तुम अपनी ही शरण में जाओ। किसी दूसरे का सहारा मत ढूँढो। केवल सच्चे धर्म को अपना दीपक बनाओ। केवल सच्चे मार्ग की शरण लो "

महात्मा बुद्ध ने यह भी सीख दी थी, "भिक्षुओ ! बहुजनों के हितों के लिए, बहुजनों के सुख के लिए और लोक पर दया करने के लिए विचरण करो। एक साथ दो मत जाओ । अकेले ही जाओ । स्वतः ज्योति लो । दूसरों को रोशनी दो ।"

□

तहजीब

हकीम लुकमान अपने समय के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक एवं साधु पुरुष थे । उनसे एक बार एक जिज्ञासु ने पूछा, "आपने तहजीब (शिष्टाचार) कहाँ से सीखी ?"

"यह तहजीब मैंने मूर्खों से सीखी ।" हकीम लुकमान ने जवाब दिया ।

जिज्ञासु ने फिर प्रश्न किया, "मूर्खों से हम कैसे सीख सकते हैं ?"

हकीम लुकमान ने उत्तर दिया, "उनकी जो बात समझ में नहीं आई, वह छोड़ दी ।"

□

एकाग्रता

एकनाथ महाराष्ट्र के महान् संत थे । एक बार उनके हिसाब में एक पाई की भूल हो गई । हिसाब नहीं मिल रहा था, इसलिए वह सारी रात जागते रहे । तीसरा पहर हो गया । अचानक वह चिल्ला उठे, "मिल गया ! मिल गया !"

चिल्लाने से उनके गुरु जनार्दन स्वामी की नींद खुल गई । उन्होंने पूछा, "एकनाथ, क्या मिल गया ?"

"आखिर मेरा हिसाब मिल गया ।" एकनाथ ने उत्तर दिया ।

"तो तुम हिसाब मिलाने के लिए सारी रात जागते रहे ?" जनार्दन स्वामी ने पूछा ।

"हां गुरुदेव ।" एकनाथ ने कहा

"एकनाथ, तुम एक पाई की भूल मिल जाने से इतने प्रसन्न हो, यदि तुम संसार की भूल समझ पाते, तो कितने खुश होते। इतनी एकाग्रता और लगन से तुम भगवान् का ध्यान करते, तो संपूर्ण आनंद के भंडार भगवान् को पा जाते।"

□

मीठे फल

एक बार वाराणसी के राजा ब्रह्मदत्त अपनी कमियाँ और दोष ढूँढ़ने के लिए उत्तर भारत के कई नगरों में गए। उन्हें उनके दोष बताने वाला कहीं कोई नहीं मिला। अंत में राजा ब्रह्मदत्त बोधिसत्त्व के पास पहुँचे। बोधिसत्त्व ने राजा से कुशल-क्षेम पूछा और कहा कि वह पेड़ों से मनचाहे फल तोड़कर खा लें। राजा ने एक वृक्ष को देखा, वह फलों से लदा था। उसने पेड़ से पके फल तोड़े और कुछ पके-मीठे फल खाकर बोधिसत्त्व से पूछा, "क्या कारण है कि ये फल बहुत मीठे हैं ?"

बोधिसत्त्व ने उत्तर दिया, "निश्चय ही देश का राजा धर्मानुसार न्यायपूर्वक राज्य करता है। उसी से ये फल मीठे हैं। राजा के अधार्मिक होते ही मधु, शक्कर और जंगल के फल-मूल अमधुर हो जाते हैं।"

□

सच्चाई

हरिद्रुमन गौतम गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध गुरु थे। सत्यकाम उनके चरणों में विद्याध्ययन के लिए पहुँचा। गुरु ने पूछा, "वत्स, तुम्हारा गोत्र क्या है ?" उत्तर में सत्यकाम ने कहा, "मैंने मातुश्री से अपना गोत्र पूछा था, उन्होंने मुझे उत्तर दिया कि युवावस्था में वह अनेक व्यक्तियों की सेवा करती थी, उसे नहीं मालूम कि मेरा गोत्र क्या है। माँ ने कहा है 'जबाला उनका नाम है और सत्यकाम मेरा नाम है।' फलत मैं जबाला हू "

गुरु बोले, "सच्चा ब्राह्मण ही ऐसी सच्ची बात कह सकता है। हे सौम्य ! समिधा ले-आ। मैं तुम्हें दीक्षा अवश्य दूँगा। तू सत्य से डिगा नहीं। तू सच्चा शिष्य है।" उन्होंने सत्यकाम का यज्ञोपवीत संस्कार किया और उसे ब्रह्मचर्य की दीक्षा दी।

□

मेलजोल

एक बार अकबर ने अपने दरबार में सवाल किया कि दुनिया में भेड़-बकरियों का समूह दिखता है, परंतु कुत्तों का नहीं, क्यों ? कोई भी दरबारी ठीक जवाब नहीं दे सका। अकबर ने बीरबल से यह प्रश्न पूछा। बीरबल ने एक रात की मोहलत माँगी। शाम के समय उसने एक कमरे में भेड़ों का समूह रखा और दूसरे कमरे में कुत्तों का समूह। अगले दिन वह अकबर को लेकर उन कमरों के पास पहुँचा, तो उन्होंने देखा कि भेड़ों का सारा खाना खत्म हो गया था और वे एक-दूसरे से लिपटकर सो रही थीं। दूसरे कमरे में सारे कुत्ते घायल पड़े थे और खाना वैसा का वैसा ही रखा था। यदि कोई कुत्ता खाना खाने के लिए आगे बढ़ता, तो दूसरे कुत्ते उस पर हमला कर बैठते थे।

□

अदृश्य साथी

पैगम्बर मुहम्मद साहब अपने एक साथी के साथ जंगल में भाग रहे थे। उनके पीछे दुश्मन की फौज आ रही थी उन सब दुश्मनों से भी वह किसी तरह का वैर नहीं रखते थे

केवल दो हैं। हम दो नहीं, तीन हैं। वह तीसरा साथी अदृश्य है। खुदा को मानने वाले को कभी भी घबराने की जरूरत नहीं है।"

□

संकल्प

रामकृष्ण परमहंस प्रतिदिन बड़ी लगन से अपना लोटा राख-मिट्टी से खूब चमकाते थे। लोटा खूब चमकता था, लेकिन वह फिर भी उसे रोज माँजते रहते थे।

एक दिन उनके शिष्य ने उनसे पूछा, "महाराज, आपका लोटा वैसे ही खूब चमकता है। इतना चमकता है कि हम इसमें अपनी तस्वीर भी देख लें। रोज-रोज इसे मिट्टी, राख और जूने से माँजने में इतनी मेहनत क्यों करते हैं ?"

परमहंस मुस्करा उठे। उन्होंने कहा, "लोटे की यह चमक एक दिन की मेहनत से नहीं आई है। इसमें आए मैल को दूर करने के लिए नित्य प्रति मेहनत करनी ही पड़ती है। ठीक वैसे ही जीवन में आई बुराइयों को दूर करने के लिए प्रतिदिन संकल्प करना पड़ता है। संकल्प को अच्छे चरित्र में बदलने के लिए प्रतिदिन के अभ्यास से ही दुर्गुणों का मैल दूर करना पड़ता है। लोटा हो या मनुष्य, उसे बुराइयों के मैल से बचाने के लिए हमें प्रतिदिन कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। तभी लोटे की चमक या इंसान की चमक बची रह सकती है।"

□

बचाने वाला बड़ा

भगवान् बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था। एक दिन वह बगीचे में टहल रहे थे कि अचानक एक हंस उड़ता हुआ जमीन पर आ गिरा। सिद्धार्थ ने देखा कि हंस को तीर लगा हुआ है। कष्ट से तड़पते हंस का दुःख सिद्धार्थ से नहीं देखा गया। उन्होंने हंस को उठाकर तीर निकाला। इतने में उनका चचेरा भाई देवदत्त आया और बोला, "भाई, यह शिकार मेरा है, इसे मुझे दे दो।"

"भाई मैं इसे नहीं दूँगा " सिद्धार्थ ने जवाब दिया

"क्यों ?" देवदत्त बोला ।

देवदत्त ने सिद्धार्थ के पिता शुद्धोदन से शिकायत की और कहा, "इस हंस पर मेरा हक है । तीर मारकर मैंने इसे गिराया है ।"

सिद्धार्थ ने पिताजी से कहा, "आप ही फैसला कीजिए कि एक उड़ते हुए बेकसूर हंस पर तीर चलाने का उसे क्या अधिकार था ? इसे क्यों घायल कर दिया ? मुझसे इस दुःखी प्राणी का कष्ट नहीं देखा गया, इसलिए मैंने तीर निकालकर इसका उपचार किया और इसके प्राण बचाए ।"

राजा शुद्धोदन ने दोनों की बात सुनकर फैसला दिया और कहा, "हंस पर अधिकार सिद्धार्थ का है, क्योंकि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है ।"

□

मृत्यु

भगवान् बुद्ध अपने शिष्यों के साथ एक नगर श्रावस्ती में गाँव-गाँव जाकर विचरण कर उपदेश दे रहे थे । एक गाँव में एक औरत अपने परिवार के साथ रहती थी । अचानक उसका बच्चा बहुत ज्यादा बीमार हो गया और उसकी मृत्यु हो गई । उसकी मृत्यु को वह औरत सहन न कर पाई और मृत बच्चे को लेकर इधर-उधर सभी के पास गई कि कोई बच्चे को जीवित कर दे । गाँव से बाहर भगवान् बुद्ध लोगों को प्रवचन दे रहे थे । जब उस औरत को पता चला कि भगवान् बुद्ध आए हुए हैं, तो वह अपने मृत बच्चे को लेकर भगवान् के पास गई और रोते-बिलखते हुए महात्मा बुद्ध के चरणों में बालक को रखकर बोली, "भगवन ! मेरे एकमात्र लाल को जीवित कर दो ।"

भगवान् बुद्ध ने कहा, "मैं तुम्हारे इस पुत्र को जीवित कर दूँगा, लेकिन मुझे तुम ऐसे घर से एक मुट्ठी पीली सरसों के दाने ला दो, जिस घर में कभी मृत्यु नही हुई हो ।"

उस औरत ने घर-घर जाकर पूछा । उसकी यह सुनकर आँखें खुल गईं कि प्रत्येक परिवार में किसी न किसी सदस्य की मौत हुई है

सौंदर्य और बुद्धि

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ अंग्रेजी भाषा के विख्यात लेखक व नाटककार थे। वह जितने अच्छे लेखक थे, उतने ही हाजिरजवाब भी थे, लेकिन बहुत ही कुरूप थे। एक दिन उनके पास बहुत ही सुंदर और धनवान अमेरिकी महिला आई। उसने कहा,"बड़ा अच्छा हो, यदि हम दोनों विवाह कर लें। हमारे वैवाहिक संबंध से ऐसी संतान पैदा हो सकती है, जो रंग-रूप में मेरी प्रतिमूर्ति हो और प्रतिभा व चतुराई में आप जैसी।"

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ एक क्षण रुके, फिर बोले, "मैडम, कुदरत ने तुम्हारी तदबीर के खिलाफ खेल किया, तो क्या होगा ? यदि उस संतान को मेरा रंग-रूप मिल गया और अक्ल तुम्हारी, तो फिर क्या करोगी ?"

जवाब सुनते ही महिला उलटे पैर लौट गई।

□

गुलामों का गुलाम

सम्राट् सिकंदर बहुत अधिक अभिमानी था। वह यह सहन नहीं कर सकता था कि कोई उसके सामने सिर उठाए। एक साधु देवजानस सार्वजनिक स्थान पर लेटा हुआ था। वहाँ समीप से ही सिकंदर को जाना था। सिकंदर के अंगरक्षक सिपाही आए। उन्होंने आकर कहा, "देवजानस, दुनिया जीतने वाला बादशाह सिकंदर आ रहा है। तू उठ जा और उसका स्वागत कर।" लेकिन वह साधु टस से मस न हुआ।

इतने में सिकंदर भी अपने दल-बल के साथ पहुँच गया। उसने साधु से कहा, "देवजानस, जानता नहीं, दुनिया जीतने वाला यूनान का बादशाह सिकंदर तेरे सामने खड़ा है और तू उसे प्रणाम नहीं करता !"

इस पर देवजानस ने कहा, "मेरे दो गुलाम हैं, पहला इच्छा और दूसरा लालच। मैंने इन्हें अपने काबू में किया हुआ है। मेरे इन दासों ने तुझे अपने वश में कर रखा है। अब बता कि जब तू मेरे गुलामों के वश में है, तो मैं उनके गुलाम सिकन्दर का कैसे स्वागत करूं ?"

सिकंदर ने निरुत्तर होकर उस साधु को प्रणाम किया और वहाँ से अपनी सेना के साथ आगे निकल गया ।

□

अवकाश

जापानी पराजय के बाद एक अमेरिकी संस्था ने अपनी शाखा जापान में खोली । उस संस्था में सारे कर्मचारी जापानी ही रखे । अमेरिकी कानून के अनुसार सप्ताह में केवल पाँच दिन काम करने का निश्चय किया गया और शनिवार तथा रविवार की छुट्टी रखी गई । उनका सोचना था कि सप्ताह में दो दिन अवकाश पाकर जापानी खुश होंगे, परंतु संस्था के व्यवस्थापक को बड़ी हैरानी हुई । उन्होंने देखा कि जापानी कर्मचारी इस व्यवस्था का सामूहिक विरोध कर रहे हैं । उसने कर्मचारियों को बुलाया और पूछा, "तुम्हें क्या कष्ट है, जो तुम विरोध कर रहे हो ?"

जापानी कर्मचारी एक स्वर में बोले, "हम दो दिन खाली नहीं रहना चाहते । हमारे लिए सप्ताह में एक दिन का अवकाश ही पर्याप्त है ।"

जापानी कर्मचारी फिर बोले, "आपका खयाल है कि अधिक आराम से हम प्रसन्न होंगे । नहीं, यह बात ठीक नहीं । अधिक आराम से हम आलसी बन जाएँगे । मेहनत के काम में हमारा दिल नहीं लगेगा । हमारा स्वास्थ्य और हमारा राष्ट्रीय चरित्र गिरेगा । अवकाश के कारण हम व्यर्थ ही घूमेंगे-फिरेंगे और हम फिजूलखर्ची बन जाएँगे । जो हमारी सेहत बिगाड़े, हमारी आदत खराब करे, आर्थिक स्थिति खराब करे, हमें ऐसा अवकाश नहीं चाहिए ।"

□

ज़रूरत

स्वस्थ, बलिष्ठ व सात्त्विक सौंदर्य को देखकर अभिभूत हो उठी। उसने ऐसा दिव्य तेज और सौम्य आकर्षण पहले कभी नहीं देखा था। वह तेजी से भागती हुई भिक्षु के पास पहुँची और बोली, "भंते ! बड़ी कृपा होगी, यदि मेरे घर पर पधारेंगे। यह मेरा सारा वैभव, मेरा घर और स्वयं मैं आपकी हूँ। कृपया स्वीकार करें।"

भिक्षु ने सुंदरी को निहारा, फिर कहा, "मैं तुम्हारे पास आऊँगा, पर अभी उपयुक्त समय नहीं है। वैसा समय आने पर स्वयं पहुँचूँगा।"

समय-चक्र के परिवर्तन से उस सुंदरी का सौंदर्य और आकर्षण सब समाप्त हो गया। नदी के किनारे वासवदत्ता पड़ी थी। उसका शरीर रोग से दुर्गंधमय हो उठा था। ऐसे ही समय एक भिक्षु वहाँ पधारे और उसके समीप पहुँचकर बोले, "वासवदत्ता, मैं आ गया हूँ।"

वासवदत्ता ने कहा, "बहुत देर हो गई है।"

उपगुप्त बोले, "भद्रे ! यही उपयुक्त समय है। ऐसे ही समय तुम्हें मेरी जरूरत थी।" यह कहकर भिक्षु उसके उपचार में लग गए।

□

मौत से मजाक

खुदीराम बोस प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। छोटी उम्र में ही हाथ में भगवद्गीता लेकर और वंदेमातरम् का नारा लगाते हुए उन्होंने फाँसी का फंदा चूम लिया था। इस युवक को जिस दिन फाँसी होने वाली थी, उस दिन वह बहुत खुश था। तभी जेल अधीक्षक ने पूछा, "बेटा, तुम्हें कोई चीज खाने के लिए चाहिए ?"

खुदीराम बोले, "कुछ नहीं।"

जेल अधीक्षक घर गए और एक फलों से भरी टोकरी लाए और कहा, "बेटा, यह खा लो, मीठे आम हैं।"

खुदीराम बोले, "बाबा, धन्यवाद !"

फिर अधीक्षक चले गए कुछ देर बाद आए और पूछा "बेटा आम खाए नहीं ?"

खुदीराम ने कहा, "फाँसी का फंदा याद आ गया।"

अधीक्षक ने वार्डर को कहा, "यह आम उठा लो।"

वार्डर ने आम उठाए तो वे पिचक गए और खुदीराम ठहाका मारकर हँस पड़े। उन्होंने आम चूसकर फुलाकर रख दिए थे। इस तरह उन्होंने मौत से भी मजाक किया था।

□

व्यापार करने की छूट

मुगल बादशाह शाहजहाँ की बेटी सख्त बीमार हुई। राजदरबार के वैद्यों और हकीमों ने बहुत इलाज किया, परंतु वह ठीक नहीं हुई। बादशाह शहजादी की बीमारी के कारण बहुत उदास रहने लगे। एक दरबारी ने एक अंग्रेज डॉक्टर बाटन के बारे में बादशाह को बताया। बादशाह ने डॉक्टर बाटन को बुलाया और शहजादी का इलाज करने के लिए कहा। उनके इलाज से जल्दी ही शहजादी का मर्ज चला गया। बादशाह ने डॉक्टर बाटन को बुलाया और कहा, "जमीन, जायदाद, रुपया, हीरे-जवाहरात, जो चाहें, माँग लें।" उस डॉक्टर ने कहा, "बादशाह, यदि आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं, तो मुझे अंग्रेज कौम के लिए छोटी-सी रियायत दे दें। अंग्रेज हिंदुस्तान में जहाँ कहीं भी व्यापार के लिए जाएँ, उन्हें हरेक स्थान पर बिना रोकटोक के व्यापार करने की छूट दी जाए।" इतिहास साक्षी है कि उस अंग्रेज डॉक्टर की इस छोटी-सी माँग के सहारे अंग्रेज व्यापारी सारे देश में छा गए और कुछ वर्षों में यहाँ के शासक बन बैठे।

□

कुछ असभव नहीं

परंतु उसका मन बहुत ही साहसी था। एक बार यूरोप के सबसे बड़े और ऊँचे पहाड़ आल्प्स को लाँघकर शत्रु-प्रदेश पर विजय पाने के लिए जाना था। उसके सेनापति और सैनिक ठिठक गए, परंतु नेपोलियन क्षण-भर के लिए भी न ठिठका। उसने कहा, "मेरे शब्दकोश में असंभव नाम का कोई शब्द नहीं है। ऐसी कोई भी चीज नहीं है, जिसका इंसान इरादा कर ले और पाने में असमर्थ रहे।"

नेपोलियन ने अपनी फौज को ललकारा और स्वयं उसकी कमान सँभाली और आल्प्स पहाड़ को जीतने के साथ-साथ शत्रु-प्रदेश को भी जीत लिया।

□

कालिदास

कालिदास महान् कवि व महाविद्वान् थे। एक बार उनको अपनी विद्वता पर अहंकार हो गया। इसलिए उनके एक समकालीन कवि ने उन्हें चुनौती दे दी कि पहले मुझे पराजित कर लो, फिर तुम्हें सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाएगा। कालिदास कई दिनों तक चिंतन में डूबे रहे और फिर जब उनसे रहा न गया, तो वह पैदल ही अपने प्रतिद्वंद्वी को हराने के लिए चल पड़े। जब चलते-चलते वह थक गए, तो उन्होंने एक गाँव की पनिहारिन से पानी पिलाने को कहा।

"कौन हो ?" पनिहारिन ने पूछा।

"मैं बलवान हूँ।" कालिदास ने जवाब दिया।

"अन्न और जल ही प्राणियों को शक्ति देते हैं, वे ही असली बलवान हैं। तुममें कौन-सा बल है ?" परिहारिन ने पूछा।

कालिदास निरुत्तर हो गए और लौट गए। कुछ दिनों बाद फिर दूसरे रास्ते से अपने गंतव्य पर चले। प्यास लगने पर उन्होंने फिर एक पनिहारिन से पानी माँगा। उसके परिचय पूछने पर कालिदास ने कहा, "मैं एक निर्बल आदमी हूँ।" पनिहारिन हँस पड़ी और बोली, "तुम कैसे निर्बल हो ? असल में निर्बल तो गाय और वनिता (महिला) होती हैं।"

कालिदास फिर निरुत्तर हो गए और वापस लौट आए फिर तीसरी बार अपने

गंतव्य पर जाते हुए रास्ता भूलकर जंगल में भटक गए। एक झोंपड़ी में वयोवृद्ध माता मिली। उसने कालिदास से पूछा, "भाई, जंगल में क्यों भटक रहे हो, कौन हो ?"

कालिदास ने उत्तर दिया, "एक यात्री हूँ।"

बूढ़ी माँ ने कहा, "तुम कैसे यात्री हो ? असली यात्री तो सूरज और चाँद हैं, जो कभी रुकते ही नहीं।"

कालिदास फिर निरुत्तर हो गए और अपने निवास-स्थान पर लौट आए। उनका सारा अहंकार और बड़प्पन खत्म हो गया था।

□

उपकार

संत एकनाथ (महाराष्ट्र के संत) एक बार नदी-स्नान करके अपने निवास-स्थान पर जा रहे थे। जब वह बड़े पेड़ के नीचे से गुजरे, तो वहाँ खड़े व्यक्ति ने उन पर कुल्ला कर दिया। संत एकनाथ बिना कुछ बोले स्नान करने चले गए। स्नान करके जब वह फिर उस पेड़ के नीचे से निकले तो उस व्यक्ति ने उन पर फिर कुल्ला कर दिया। ऐसा लगभग 108 बार हुआ। संत एकनाथ जी ने बिना कुछ किए 108 बार लगातार स्नान किया। अंत में वह दुष्ट पसीज गया और उनके चरणों में झुककर बोला, "महाराज, मेरी दुष्टता को माफ कर दो। मेरे जैसे पापी के लिए नरक में भी स्थान नहीं है। मैंने आपको परेशान करने के लिए खूब तंग किया, लेकिन आपका धीरज डिगा नहीं। मुझे माफ कर दो।"

महात्मा ने कहा, "कोई चिंता की बात नहीं, तुमने मुझ पर मेहरबानी की, आज मुझे 108 बार स्नान करने का सौभाग्य तो मिला। कितना उपकार है तुम्हारा मेरे ऊपर।"

और वह दुष्ट शर्म से पानी-पानी हो गया।

□

प्रार्थना

उन दिनों दीनबंधु एंड्रूज शांति निकेतन में रहते थे । एक दिन एक पादरी प्राध्यापक उनसे मिलने आए । वार्तालाप के बीच पादरी ने पूछा, "क्या यहाँ कोई गिरजाघर है ?" एंड्रूज के मना करने पर उन्होंने कहा, "तब तो आपको रविवार को प्रार्थना करने में बड़ी कठिनाई होती होगी ?"

एंड्रूज ने कहा, "मेरी असली प्रार्थना सद्ज्ञान संवर्धन की सेवा में लगे रहना ही है । रविवार की प्रार्थना भी मैं इसी तरह पूरी कर लेता हूँ ।"

□

बापू की हिम्मत

पडित परचुरे शास्त्री (महाराष्ट्र के प्रख्यात विद्वान्) कोढ़ से पीड़ित हो गए । इस बीमारी के कारण वह परिवार और जन समाज से उपेक्षित हो गए । जब चिकित्सको ने भी जवाब दे दिया, तब वह निराश होकर वर्धा जिले में सेगाँव (वर्तमान सेवाग्राम) आ गए । उन्होंने यह निश्चय किया कि वह अपने जीवन की अंतिम घड़ियाँ बापू के आश्रम में बिताएँगे । वह गाँव के पास की एक निर्जन सड़क पर लेट गए । उन्हे देखने के लिए ग्रामवासी और आश्रमवासी आए । उनको तड़पता देखकर भी कोई उनके पास नहीं आया, लेकिन बापू खबर मिलते ही काम छोड़कर आए और उन्हे सहारा देकर आश्रम ले गए । सभी लोग दूर से ही तमाशा देखते रहे । बापू ने स्वय ही उनके घाव धोए, उनकी मालिश की । वह महीनों उनकी सेवा में जुटे रहे । अत में आश्रम के कार्यकर्ताओं में भी हिम्मत आई । वे भी मालिश और सेवा करने मे बापू की मदद करने लगे, परतु बापू ने स्वयं किसी से उनकी सेवा के लिए एक बार भी न कहा ।

□

देशवासी

स्वामी विवेकानंद जी 'विश्वधर्म सम्मेलन' में भाग लेने अमेरिका पहुँचे । वह सादे वस्त्रों में एक बगीचे में बैठे थे कि एक भद्र महिला उनके पास आई और थोड़ी-सी बातचीत से वह उनसे प्रभावित हो गई और अपने पति की इच्छा से वह उन्हें अपने आवास पर ले गई और उनके रहने, खाने, पीने की समुचित व्यवस्था कर दी । एक रात दो बजे स्वामी जी के कमरे से रोने की आवाज सुनकर उस महिला की नींद खुल गई । उसने स्वामी जी से पूछा, "स्वामी जी, आपके रोने का क्या कारण है ? आपको क्या कष्ट है ? मखमली बिस्तर छोड़कर आप नंगे फर्श पर ठंड से क्यो ठिठुर रहे है ?"

स्वामी जी ने उत्तर दिया, "मुझे यहाँ पूरा आराम है, पर ये रेशमी गद्दे और ऊनी कपड़े मेरा उपहास कर रहे हैं । मुझे अपने गरीब देश के करोड़ों निर्धन, नगे देशवासी नहीं भूलते । वे देश के लिए अनाज पैदा करते हैं, पर उन्हें खुद खाने को एक दाना अनाज मयस्सर नहीं, वे ठंडी रातों में ईंट का सिरहाना लगाकर कठोर जमीन पर सो जाते हैं । उन्हीं देशवासियों की याद में मुझे इन रेशमी गद्दों पर नीद नही आई । मुझे यही अफसोस है कि मेरे कारण आपकी नींद खराब हो गई ।"

□

सादगी

मौर्य सम्राट् चंद्रगुप्त के प्रधानमंत्री आचार्य चाणक्य की कुटिया पर एक दिन एक महात्मा पधारे । भोजन का समय था । महात्मा ने उनका भोजन करने का आग्रह स्वीकार कर लिया । कुटिया के एक कक्ष में रसोई थी । वहाँ दो महिलाएँ खाना बनाने में लगी हुई थीं । उन्होंने जल्दी-जल्दी खाना परोसा । भोजन बहुत सादा था— थोड़े से चावल, कढ़ी और एक सब्जी । साधु को बड़ी हैरानी हुई और उसने चाणक्य से पूछा "आप इस बड़े साम्राज्य के निर्माता और शक्तिशाली प्रधानमंत्री है, फिर यह सादा जीवन क्यों बिताते है ?"

आचार्य चाणक्य ने कहा, "जनता की सेवा के लिए मैं प्रधानमंत्री बना हूँ। इसका अर्थ यह नहीं कि राज्य की संपत्ति का मैं उपयोग करूँ। यह कुटिया भी मैंने अपने हाथों से बनाई है।"

□

प्राणरक्षा

संत एकनाथ एक बार प्रयागराज पहुँचे। उनके साथ कुछ संत थे। सभी ने तय किया कि इस त्रिवेणी के जल को हम रामेश्वरम् में चढ़ाएँगे। सभी ने अपनी-अपनी काँवर में त्रिवेणी का पवित्र जल भरा और रामेश्वरम् की ओर चल दिए। रास्ते में एक गधा पानी की प्यास से तड़प रहा था। उसकी दशा देखकर संत एकनाथ द्रवित हो गए। उन्होंने अपनी काँवर खोली और उस प्यासे गधे को पानी पिला दिया। वह गधा स्वस्थ-सशक्त होकर घास चरने लगा।

बाकी संतों को उनका यह व्यवहार पसंद नहीं आया और उन्होंने कहा, "आप रामेश्वर के तीर्थ पर जल चढ़ाने के पुण्य से वंचित रह गए।"

संत एकनाथ ने हाथ जोड़कर कहा, "हमारा दयालु भगवान् सभी जीवों में व्याप्त है। मैंने तो एक पीड़ित, दुखी प्राणी को पानी पिला दिया, उसकी प्राण-रक्षा की। समझो, मेरी पूजा तो सार्थक हो गई।"

□

दहेज

इस्लाम के पैगंबर हजरत मुहम्मद ने अपनी इकलौती बेटी फातिमा की शादी करने का निश्चय किया, तब उन्होंने अपने दामाद अली को बुलवाया। उन्होंने अली से पूछा, "बेटा, तुम्हारे घर में कुछ खाने का सामान होगा?"

अली ने जवाब दिया, "हजरत, हाँ, कुछ खाने को जरूर होगा। याद आया,

कुछ खजूरें होंगी और थोड़ा-सा सत्तू भी होगा।" हजरत ने कहा, "बेटा, यही सामान ले आओ।"

निकाह के बाद वही खजूर और सत्तू सभी मेहमानों को बाँट दिए। सभी ने खुशी से खाया।

हजरत मुहम्मद ने फातिमा को दहेज में आटा पीसने की चक्की, पानी भरने के लिए एक मशक और पहने हुए, पैवंद लगे धुले कपड़ों के साथ विदा कर दिया।

□

जाति-भेद

पानीपत के युद्ध-क्षेत्र की कहानी है। मैदान के एक ओर अहमदशाह अब्दाली की फौज थी, दूसरी ओर मराठों की फौज खड़ी थी। दोनों ही पक्ष एक-दूसरे की ताकत और कमजोरी का ठीक-ठाक अंदाजा करना चाहते थे, इसलिए एक-दूसरे पर हमला करने से झिझक रहे थे। एक दिन शाम के समय अहमदशाह अब्दाली ने देखा कि मराठों की फौज के शिविर में स्थान-स्थान पर आग की लपटें निकल रही हैं। उसने अपने सिपहसालार से पूछा, "ये आग की लपटें कैसे चमक रही हैं ? यह सब क्या हो रहा है ?"

अब्दाली के सिपहसालार ने उत्तर दिया, "इन लोगों में जाति-भेद है, ये एक-दूसरे के हाथ का खाना नहीं खाते, इसलिए अलग-अलग खाना बना रहे हैं।"

यह सुनकर अहमदशाह अब्दाली बोला, "तब तो हमने मैदान जीत लिया।"

उसने बिना समय खोए, तुरंत हमला कर दिया और सचमुच ही भारतीय सैनिकों की आपसी फूट एवं मतभेदों से पानीपत के मैदान में अहमदशाह अब्दाली जीत गया।

□

माइनस फोर

महात्मा गांधीजी गोलमेज सम्मेलन से अपने देश वापस आ रहे थे । फ्रांस के एक बंदरगाह पर कुछ पत्रकार उनसे मिलने आए । पत्रकार उस समय की फैशनेबल पोशाक 'प्लस फोर' सूट पहने थे, लेकिन गांधीजी धोती पहने हुए थे । पत्रकार उन्हें उस पोशाक में देखकर हैरान रह गए, क्योंकि उन्होंने तो यह कल्पना भी नहीं की थी कि गांधीजी धोती पहने होंगे । गांधीजी उनकी परेशानी समझ गए और हँसते हुए बोले, "आप लोग फ्रांस की पोशाक 'प्लस फोर' पहने हैं और मैं भारत की पोशाक 'माइनस फोर' पहने हूँ ।"

□

सरकारी पैसा

राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्रप्रसाद बिहार के सरकारी दौरे पर थे । राँची पहुँचने पर उन्हें महसूस हुआ कि उनके जूते काफी घिस चुके हैं । उन्होंने यह बात अपने सचिव से कही, तो वह जूते का एक कीमती और मुलायम जोड़ा खरीद लाया । जब डॉ० राजेंद्रप्रसाद ने जूते देखे, तो काफी नाराज होकर बोले, "मैं सस्ते और कड़े जूते पहनने का अभ्यस्त हूँ । आप इतने महँगे और मुलायम जूते क्यों लाए । कृपया इन्हें लौटा दीजिए ।"

जब निजी सचिव जूते लौटाने के लिए जाने लगे, तो राष्ट्रपति जी बोले, "अभी तत्काल जाने की जरूरत नहीं है । दो मील आने-जाने में कितना पेट्रोल खर्च होगा, उस बारे में भी सोचो । जब किसी और कार्य से उधर जाओ, तो जूते भी बदल लाना । सरकारी पैसे को यूँ फूँकना ठीक नहीं ।"

□

अंतर

लोकमान्य तिलक जब विलायत से लौटे, तो उनके तथा ताँत्या साहेब कलेकर के सम्मान में पूना के ओंकारेश्वर मंदिर के प्रांगण में स्वागत-समारोह का आयोजन किया गया । समारोह के बाद एक स्वयंसेवक ने लोकमान्य तिलक से अपनी दो घोडों की बग्घी में बैठने के लिए कहा । जब स्वयंसेवक ने उन लोगों को पहनाई गई मालाएँ बग्घी में रखनी शुरू कीं तो तिलक जी ने सारी मालाएँ बग्घी के कोचवान की तरफ बढ़ाते हुए कहा, "लो, ये हार अपने दोनों घोड़ों के गले में डाल दो । जिस तरह तुम्हारे ये घोड़े इस बग्घी को खींचते हैं, उसी प्रकार हम दोनों देशरूपी बग्घी को खींचते हैं । हम में और इन घोड़ों में कोई अंतर नहीं है ।"

□

कर्म का संदेश

भगवान् बुद्ध के एक शिष्य विनायक को जरूरत से ज्यादा बोलने की आदत थी । इसी आदत की वजह से वह खूब जोर-जोर से बोलकर भीड़ एकत्र करते और फिर धर्मोपदेश देते । श्रद्धालुओं ने तथागत से शिकायत की । एक दिन तथागत ने विनायक को बुलाया और बातों-बातों में बड़े प्रेम से पूछा, "भिक्षु, अगर कोई ग्वाला सडक पर निकली गायों को गिनता रहे, तो क्या वह उनका स्वामी बन जाएगा ?"

"नहीं, भंते ! सिर्फ गायों को गिनने वाला उनका स्वामी कैसे हो सकता है ? उनका वास्तविक स्वामी तो वह होता है जो उनकी देखभाल, सेवा में जुटा रहता है ।"

तथागत बोले, "तो तात ! धर्म को जीभ से नहीं, बल्कि जीवन से बोलना सिखाओ और प्रजा की सेवा-साधना में तन्मयतापूर्वक जुटे रहकर उन्हें धम्म संदेश दो ।"

विनायक ने कहा, "आपकी आज्ञा शिरोधार्य है । अब वाणी से नहीं, कर्म से धम्म संदेश दूँगा ।"

□

किसकी रोटी

स्वामी दयानंद सरस्वती एक बार किसी सभा को संबोधित कर रहे थे। सभा में अधिकांश कट्टरपंथी ब्राह्मण थे। सभी ध्यानपूर्वक उनकी बातें सुन रहे थे। तभी एक नाई, जो स्वामी जी का परम भक्त था, भोजन की थाली लेकर आया और स्वामी जी के सामने श्रद्धापूर्वक रख दी। स्वामी जी सबके सामने भोजन करने लगे। यह देखकर श्रोतागण हैरान होकर बोले, "यह क्या स्वामी जी, आप नाई की रोटी खा रहे हैं ?"

स्वामी जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मेरे भाई, यह नाई की रोटी नहीं, गेहूँ की है। किसी के हाथ का स्पर्श मात्र होने से अन्न पवित्र या अपवित्र नहीं हो जाता।"

□

विनोबा कैसे बने

विनोबा भावे का नाम विनायक नरहर भावे था। एक बार वे गांधीजी से मिलने अहमदाबाद गए। साबरमती आश्रम में उन्होंने काफी समय बिताया। बहुत दिनों बाद गांधीजी को पता चला कि भावे घर में बिना कुछ बताए ही यहाँ चले आए हैं। गांधीजी ने तुरंत उनके पिता को पत्र लिखा—आपका विनोबा भावे हमारे पास है।

यह पहला अवसर था, जब विनायक नरहर भावे के लिए विनोबा शब्द का प्रयोग किया गया था। तभी से लोग उन्हें विनोबा भावे नाम से पुकारने लगे। यह उसी परंपरा का निर्वाह था, जिसके अंतर्गत संत ज्ञानेश्वर को ज्ञानोवा और संत तुकाराम को तुकोवा कहा जाता है।

□

दान

बालगंगाधर तिलक की माता के द्वार पर एक भिक्षुक आया । उन्होंने उसे दान में अन्न दिया । अन्न के साथ ही एक आभूषण भिक्षुक की झोली में जा गिरा । डाकुओं के आतंक के कारण पहले लोग अपने आभूषणों को अन्न के साथ छिपाकर रखते थे । इसलिए जब माताजी ने दान देने के लिए अन्न निकाला, एक आभूषण उस अन्न के साथ आ गया । माताजी जब भिक्षुक की झोली से आभूषण निकाल रही थीं, तभी बाल तिलक आ गए । सारी बात पता चलने पर उन्होंने कहा, "माँ ! धर्म, परंपरा और शास्त्र के अनुसार एक बार दिया हुआ दान वापस नहीं लिया जाता ।"

□

तप और सत्य

भगवान् महावीर एक बार कहीं जा रहे थे । रास्ते में एक ग्रामीण मिला । उसने उनके चरणों पर गिरकर प्रणाम किया । उत्तर में भगवान् महावीर ने भी उसके चरणों पर माथा टेका । वह ग्रामीण सकपकाया और बोला, "आप तो तपस्या के भंडार हैं । उसी विभूति को मैंने नमन किया है, पर मैं तो कुछ भी नहीं हूँ, फिर आपने मेरे चरणों पर गिरकर प्रणाम क्यों किया ?"

महावीर ने कहा, "तुम्हारे भीतर जो परम पवित्र आत्मा है, मैं उसी को देखता हूँ और नमन करता हूँ । मेरे तप से तुम्हारा सत्य बड़ा है ।"

□

लटकती तलवार

का आयोजन किया और डेमोक्लीज नामक उस दरबारी को प्रतिष्ठित पद पर बिठाया ।

डेमोक्लीज मन ही मन बहुत खुश हुआ, लेकिन जब उसने देखा कि एक बाल से बँधी तलवार उसके सिर पर लटक रही है, तो उसके होश उड़ गए । एक भी निवाला उसके हलक से नीचे उतरना मुश्किल हो गया । वह सोच रहा था, यदि यह तलवार टूटकर उसके सिर पर गिर पड़ी, तो क्या होगा ? थोड़ी ही देर में उसकी समझ में सब कुछ आ गया कि उसे सबक सिखाने के लिए राजा ने ही यह तलवार लटकवाई थी, जिससे वह जान सके कि राजा का जीवन भी निश्चित नहीं है । हर पल खतरे में रहता है । लटकती तलवार का अर्थ है, निरंतर खतरा मौजूद रहना ।

□

चूहा और भगवान्

बालक मूलशंकर महाशिवरात्रि के पर्व पर मंदिर में गया । वहाँ वह शिवलिंग की ओर दृष्टि गड़ाए देख रहा था । अचानक एक चूहा आया और मूर्ति पर चढ़े फल खाने लगा । बालक भयभीत हो गया, क्योंकि उसे विश्वास था कि इसी क्षण भगवान् शिव का रौद्र रूप प्रकट होगा और चूहे का काम तमाम हो जाएगा ।

लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं हुआ । चूहा मजे से फुदक-फुदककर प्रसाद खाता रहा । शिवलिंग पत्थर ही बना रहा । इस घटना का मूलशंकर पर गहरा प्रभाव पड़ा । यही मूलशंकर आगे चलकर स्वामी दयानंद सरस्वती कहलाए ।

□

अनोखी सादगी

भवन के सहायक प्रबंधक कुछ गर्म कपड़े लेकर शास्त्री जी के पास आए । उन्होंने सिर्फ एक गर्म कोट खरीदा, जिसकी कीमत सिर्फ 39 रुपए थी । पूछने पर उन्होंने कहा, "मेरे पास फाजिल पैसा नहीं है । नेहरू जी की दी हुई दो अचकनें हैं, जो टखने तक आती हैं । बस, काम चल जाएगा ।"

□

भाई-भतीजावाद

डॉक्टर जाकिर हुसैन जब देश के राष्ट्रपति थे, तब उन्हें अपने एक संबंधी का पत्र मिला । उस पत्र में कोई कार्य करवाने का अनुरोध था और इसीलिए संबंधी ने पत्र में बार-बार उनका संबंधी और मुसलमान होने की दुहाई दी । उस पत्र को पढ़कर जाकिर हुसैन काफी खिन्न हुए और अपने निजी सहायक से बोले, "शायद मेरे संबंधी को यह मालूम नहीं है कि मै अब मुसलमान नहीं रहा, केवल भारतीय हूँ । मैं इस पद पर देश-सेवा के लिए हूँ, भाई-भतीजावाद के पोषण के लिए नहीं । यदि यह सज्जन सचमुच अपनी योग्यता का दम भरते हैं, तो इन्हें मेरी सहायता की क्या जरूरत है ?"

□

सिर पर भार

नेपोलियन बोनापार्ट पेरिस में एक महिला के साथ घूम रहे थे । वह महिला को सम्मान देना चाहते थे, इसलिए उसके पीछे चल रहे थे । तभी सामने से एक मजदूर सिर पर भारी गट्ठर लादे आता दिखाई दिया । रास्ता सँकरा था । मजदूर को रास्ता देने के लिए नेपोलियन एक तरफ हो गए, लेकिन अपने धन और वैभव के घमंड के कारण वह महिला मजदूर को अनदेखा करके चलती रही यह देखकर नेपोलियन महिला का हाथ पकडकर एक तरफ करते हुए बोले "मैडम भार को

सम्मान दो । जिसके सिर पर भार है, चाहे वह भारी गट्ठर हो या हलका, सम्माननीय है ।" इस एक ही वाक्य में नेपोलियन ने महिला को काफी-कुछ समझा दिया ।

□

माँ की पूजा

एक बार बंगाल में भारी बाढ़ आई । हजारों गाँव बह गए । जान-माल का काफी नुकसान हुआ । लाखों लोग बेघर हो गए । सुभाषचंद्र बोस भी स्वयंसेवकों को साथ लेकर बाढ़-पीड़ितों की सेवा में जुट गए ।

बाढ़-पीड़ितों की सेवा करने के लिए जाने से पहले उनके पिता ने उनसे पूछा, "तुम वहाँ जा रहे हो, लेकिन अपने गाँव कोदलिया में अपने घर पर माँ दुर्गा की पूजा होगी, उसमें तुम नहीं रहोगे ?" बोस ने कहा, "नहीं, पिताजी, मैं आपके साथ नहीं जा सकता । आप सब गाँव जाकर पूजा करें । मैं तो दीन-दुखियों की पूजा करके वास्तविक माँ की पूजा करूँगा ।"

□

रोगी-सेवा

बाबा आमटे का पूरा नाम मुरलीधर देवीदास आमटे है । एक बार रात में सिर पर मैले की टोकरी रखे जाने की सोच रहे थे । मूसलाधार बारिश हो रही थी । जैसे ही उन्होंने कदम बढ़ाया, एक कोढ़ी को देखा । उसके घाव खुले थे और वह दर्द से कराह रहा था । उसकी यह दशा देखकर उनका मन करुणा से भर गया । उन्होंने रोगी के घावों को कपड़े से ढका और सोचा कि अगर यह घृणित रोग मुझे या मेरे परिवार के किसी सदस्य को हो जाए, तो क्या होगा ? बस, उसी क्षण से उन्होंने अपना जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा में लगा दिया ।

□

दिल के रिश्ते

नेताजी सुभाषचंद्र बोस से अंग्रेज सरकार इतनी डरी हुई थी कि बार-बार उनके निधन की खबरें उड़ा देती थी । उस समय वह जर्मन में थे । एक बार जब ऐसी खबर आई, तो उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे ।

यह देखकर उनके एक साथी ने कहा, "नेताजी, आप हैरान न हों । किसी आदमी के जीवनकाल में उसके मरने की खबर फैल जाती है, तो उसकी उम्र बढ़ जाती है ।"

यह सुनकर नेताजी ने आँसू पोंछे और कहा, "यह तो मैं भी जानता हूँ । मुझे इस बात की तनिक भी परवाह नहीं है कि अंग्रेज मेरे सबंध में ऐसी भ्रामक बातें उड़ाते हैं, पर मुझे यह सोचकर बड़ी हैरानी होती है कि मेरी माँ को जब यह खबर मिलती होगी, तो उसके दिल पर क्या बीतती होगी ।" कहते-कहते नेताजी की आँखें फिर भर आईं ।

□

शिष्टाचार

ईश्वरचंद्र विद्यासागर सादा जीवन और उच्च विचारों वाले थे । उन्हें कहीं भी, किसी से भी मिलने जाना होता था, तो वह धोती, चादर और चप्पल ही पहनते थे । एक बार वह प्रेसीडेंसी कॉलेज के अंग्रेज प्रिंसिपल कैट से मिलने गए । उन्होंने देखा, कैट ने अपने पैर जूतों सहित मेज पर रखे हुए हैं और उन्होंने न तो विद्यासागर जी को बैठने के लिए कहा और न ही पैर नीचे किए । विद्यासागर जी को बुरा तो लगा, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं कहा और बातचीत करके चले आए ।

कुछ दिनों बाद मिस्टर कैट को संस्कृत कॉलेज आना पड़ा । जब उन्होंने कार्यालय में प्रवेश किया तो विद्यासागर जी ने अपने पैर जूतों समेत मेज पर रख लिए और उन्हें बैठने के लिए भी नहीं कहा । उनके इस व्यवहार से क्षुब्ध होकर कैट न उनकी शिकायत शिक्षा परिषद् के सचिव डा० मुआट से कर दी

सचिव ने उनसे पूछा, तो उन्होंने कहा, "मै ठहरा एक हिंदुस्तानी। यूरोप के तौर-तरीके भला क्या जानूँ ? कुछ दिन हुए मैं मिस्टर कैट से मिलने गया था, तो मैंने उनको हू-ब-हू ऐसे ही बैठे देखा था और यह मुझसे बैठने को कहे बिना ही बातचीत करते रहे। पहले तो मुझे हैरत हुई, लेकिन फिर सोचा, शायद यूरोप में शिष्टाचार का यही ढंग हो। लिहाजा जब यह मेरे ऑफिस में आए, तो मैं उसी शिष्टता से पेश आया।" मुआट सारी बात समझ गए और उन्होंने मामले को रफा-दफा कर दिया।

□

अच्छी सरकार

एक बार कन्फ्यूशियस के किसी शिष्य ने पूछा, "अच्छी सरकार किसे कहते हैं ?"

"जिसके पास पर्याप्त अन्न हो, पर्याप्त शस्त्र हों तथा जिस पर जनता का विश्वास हो।" कन्फ्यूशियस ने उत्तर दिया।

शिष्य ने फिर पूछा, "मान लीजिए, तीनों बातें न मिल सकें, तो ?"

"इनमें से हथियार निकाल दो।" कन्फ्यूशियस ने जवाब दिया।

"यदि इन चीजों में से केवल एक ही रखनी हो, तो आप कौन-सी चीज पसंद करेंगे ?"

कन्फ्यूशियस ने गंभीर होकर कहा, "जनता का विश्वास।"

शिष्य ने फिर कहा, "यदि जनता का विश्वास त्याग दिया जाए तो ?"

कन्फ्यूशियस ने झट कहा, "ऐसी स्थिति में सर्वनाश हो जाएगा। याद रखो, कोई भी शासन अन्न और अस्त्र-शस्त्र के अभाव में तो चल सकता है, लेकिन जनता का विश्वास समाप्त होने पर एक क्षण के लिए भी नहीं टिक सकता।"

□

झूठ

रामतुन कलकत्ता के प्रसिद्ध नेता थे । एक दिन वह अपने मित्र के साथ सड़क की पटरी पर चले जा रहे थे । अचानक रामतुन इधर की पटरी छोड़कर सड़क के दूसरी ओर की पटरी पर चले गए । मित्र को यह देखकर बड़ी हैरानी हुई । उसने पटरी बदलने का कारण पूछा । उन्होंने दूसरी पटरी पर चल रहे एक व्यक्ति की ओर इशारा करके कहा, "इन महाशय ने मुझसे कुछ रुपए उधार लिए हैं । जब-जब मुझसे मिलते हैं, कह देते हैं, अमुक तिथि को रुपए चुका दूँगा, परंतु वह अपनी बात का पालन नहीं करते । इसीलिए मैं वह पटरी छोड़कर यहाँ आ गया कि उन महाशय को मेरे कारण झूठ न बोलना पड़े ।"

□

एक ही काम

उन दिनों हजारी प्रसाद द्विवेदी काशी हिंदू विश्वविद्यालय में आचार्य थे । एक बार मेरठ में उनके सम्मान में कार्यक्रम हुआ । मेरठ कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष ने उनके सम्मान में प्रशंसात्मक परिचय देने के बाद कहा, "आचार्य द्विवेदी जी से अनुरोध है कि विद्यार्थियों को दो शब्द कहें ।"

द्विवेदी जी ने कहा, "विभागाध्यक्ष जी ने अनुरोध किया है, दो शब्द कहने का, तो यह ऐसा ही है कि एक जगह का गड़रिया दूसरी जगह जाए और उससे कोई कहे, क्यों भाई, क्या तुम मेरी भेड़ें चरा दोगे ? और वह गड़रिया उत्तर में कहे, हाँ, जरूर, मेरा और काम ही क्या है ?···तो प्रिय विद्यार्थियो, अध्यापक होने के नाते मैं भी यही करता हूँ और मेरा काम ही क्या है ? काशी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को पढ़ाता हूँ, आज मेरठ कॉलेज के विद्यार्थियों को ही सही ।"

□

यह दिल्ली है

एक बार कवि रामरिख मनहर दिल्ली में हास्य रस कवि सम्मेलन का संचालन कर रहे थे। कॉलेज के कुछ लड़के मंच के पास ही बैठे थे। वे बहुत शोर-शराबा कर रहे थे। परेशान होकर मनहर ने माइक पर आकर कहा, "मैंने देश के हजारों नगरों में कवि सम्मेलनों का संचालन किया है, मगर कहीं भी ऐसा हंगामा नहीं होता, जैसा यहाँ देख रहा हूँ।"

तभी एक युवक चिल्लाया, "बेटे, यह दिल्ली है।"

मनहर जी ने एकदम उत्तर दिया, "वह तो स्टेशन पर उतरते ही, जब मेरी जेब कटी, तभी मालूम हो गया कि यह दिल्ली है।"

और फिर कवि सम्मेलन शांतिपूर्वक संपन्न हो गया।

□

गुणी

महान् गणितज्ञ रामानुजन के सहपाठी गणित से संबंधित अपनी-अपनी परेशानियाँ या प्रश्न पूछने के लिए उनके पास आते थे। वह अपने विद्यालय में गणित के विद्वान् के रूप में प्रसिद्ध थे। कठिन से कठिन सवाल भी वह आसानी से हल कर लिया करते थे। उनके यहाँ दूसरे सहपाठियों का आना-जाना खूब लगा रहता था। माता-पिता ने विद्यार्थियों से पीछा छुड़ाने के लिए जब उनका घर से निकलना बंद कर दिया, तो वह खिड़की में से ही अपने साथियों को प्रश्न समझा दिया करते थे। छात्रों के साथ-साथ रामानुजन शिक्षकों को भी काफी प्रिय थे। उनके गुणों के कारण ही गणित के अध्यापक को सौंपा जाने वाला समय-सारणी बनाने का काम भी रामानुजन को दे दिया जाता।

□

अवलंबन

भोवाडिसन डेनमार्क के प्रसिद्ध मूर्तिकार थे । उनकी कला-कृतियां देखकर लोग दाँतों तले उँगलियाँ दबा लेते थे । एक दिन कुछ लोगों ने उनसे पूछा, "आपने किस गुरु से यह विद्या सीखी और किस विद्यालय से प्रवीणता प्राप्त की ?"

भोवाडिसन ने कहा, "आत्म-समीक्षक ही मेरा गुरु है और आत्म-सुधार ही मेरा विद्यालय । मैंने हमेशा ही कृतियों में त्रुटि खोजी और अधिक उपयुक्त बनाने के लिए जो समझ में आया, उसे अविलंब अपनाया । इस अवलंबन को अपनाकर कोई भी सफलता के उच्च शिखर तक पहुँच सकता है ।"

□

भारत का नक्शा

विनोबा जी के पास एक दिन कुछ छात्र आए । उन्होंने उन्हें कागज के टुकड़े थमाते हुए कहा, "इन टुकड़ों से भारत का नक्शा बनाना है ।"

विद्यार्थी बड़ी देर तक सिरखपाई करते रहे, लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली । पास ही एक नवयुवक बैठा चुपचाप सब देख रहा था । वह हिम्मत जुटाकर विनोबा जी के पास आया और बोला, "यदि आप आज्ञा दें, तो मै इन टुकड़ों को जोड़ दूँ ।"

विनोबा जी की आज्ञा पाकर उस लड़के ने थोड़ी देर में ही उन टुकड़ों को जोड़कर भारत का नक्शा बना दिया ।

यह देखकर विनोबा जी ने उससे पूछा, "तुमने इतनी जल्दी इन टुकड़ों को कैसे जोड़ दिया ?"

उसने उत्तर दिया, "इन टुकड़ों में एक तरफ भारत का नक्शा है तथा दूसरी तरफ आदमी का । मैंने आदमी को जोड़ा, तो भारत अपने आप बन गया ।"

□

कई दिनों का परिणाम

लुई पाश्चर रैबीज के टीकों और अन्य कई जीवन-रक्षक दवाओं के आविष्कारक थे । उनकी शादी थी । दुलहन सज-धजकर अपने संबंधियों के साथ दूल्हे की प्रतीक्षा में बैठी थी । लुई पाश्चर प्रयोगशाला में प्रयोग करने में व्यस्त थे । एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया और उनसे बोला, "मित्र, आज तुम्हारा विवाह है । अपना यह प्रयोग बंद करो और मेरे साथ चलो । गिरजाघर में सब तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।"

यह सुनकर उन्होंने बिना विचलित हुए कहा, "जरा रुको, कई दिनों का परिणाम आने वाला है । पूरा काम करके ही चल सकता हूँ । नहीं तो सब विफल हो जाएगा ।"

□

राष्ट्रपति की हैसियत

राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्रप्रसाद सन् 1958 में एक बार प्रयाग गए । उन्होंने प्रसिद्ध कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला से मिलने की इच्छा प्रकट की । जब संदेशवाहक संदेश लेकर पहुँचा, तो निराला जी ने उससे कहा, "यदि राजेंद्र बाबू राष्ट्रपति की हैसियत से मिलना चाहते हैं, तो मेरे पास समय नहीं है । अगर वह राजेंदुआ की हैसियत से मिलना चाहते हैं, तो उनका स्वागत है ।"

इस बात को सुनकर राष्ट्रपति स्वयं निराला जी के आवास पर गए । निराला जी ने, "आओ राजेंदुआ !" कहकर स्वागत किया और बाहर से कुल्हड़ में चाय लाकर उन्हें पीने के लिए दी ।

□

आप जैसा पुत्र

महाराजा छत्रसाल बड़े ही प्रतापी और प्रजा के सुख-दुःख का ध्यान रखने वाले राजा थे। जनता का कष्ट जानने के लिए वह उसके बीच घूमा करते थे।

एक दिन एक सुंदर युवती ने अपना कष्ट महाराज के सामने रखा। उसने कहा, "मैं चाहती हूँ कि आप जैसी संतान मेरे भी हो। अतः मैं आपसे विवाह करना चाहती हूँ।"

युवती का कष्ट सुनकर महाराज की हैरानी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने संयम से काम लेते हुए उस युवती के चरणों में अपना सिर झुकाकर कहा, "माँ, आप जिस तरह के पुत्र की कामना कर रही हैं, संभव है, वह मेरी तरह न हो। इसलिए आज से आप मुझे अपना ही पुत्र स्वीकार करें।" और इसके बाद महाराजा छत्रसाल जीवन-भर उस युवती को अपनी माँ जैसा सम्मान देते रहे।

□

सच बोलना

जॉर्ज वाशिंगटन केवल छह वर्ष के थे, तब उन्हें उपहार में एक कुल्हाड़ी मिली। वह उन्हें बहुत पसंद आई। कुल्हाड़ी को चलाने का लोभ वह छोड़ नहीं पाए। इसलिए उन्होंने पहले छोटे-छोटे पौधों पर कुल्हाड़ी चलाई, फिर एक सेब के बडे पेड पर प्रहार किया। पेड़ का तना मोटा होने के कारण काफी कट जाने के बाद भी गिर न सका।

शाम को उनके पिता ने पेड़ की दशा देखी, तो उनका गुस्से के मारे बुरा हाल हो गया। उन्होंने चिल्लाकर पूछा, "यह किसने किया है ? जिसने भी किया है, आज उसकी खैर नहीं है।"

यह बात जॉर्ज ने सुनी तो वह डरते-डरते अपने पिता के पास आकर बोले, "यह सब मैंने किया है।" और वह अपने पिटने की प्रतीक्षा करने लगे।

उनका सच बोलना सुनकर पिता गद्‌गद होकर बोले "मुझे बड़ी प्रसन्नता है

कि तुमने सच-सच बता दिया। मैं अपने सारे पेड़ों की हानि बरदाश्त कर सकता हूँ, किंतु अपने बेटे का झूठ बोलना नहीं।" यह कहते-कहते उन्होंने उन्हें गोद में उठाकर प्यार किया।

□

जहाँ मन चाहे

महान् वैज्ञानिक एडीसन को काम में जुटे रहने की आदत-सी पड़ गई थी। उन्हें काम का नशा इतना था कि वह जब प्रयोगशाला में घुस जाते थे, तो बाहर ही नहीं निकलते थे। उनकी पत्नी उनकी इस आदत से काफी परेशान थी। एक दिन उसने उन्हें सलाह देते हुए कहा, "तुम लगातार काम करते रहते हो। कभी तो छुट्टी ले लिया करो।"

"अच्छा, यह बताओ कि मैं छुट्टी लेकर जाऊँगा कहाँ ?"

पत्नी ने चहकते हुए कहा, "कहीं भी, जहाँ तुम्हारा मन चाहे।"

"अच्छा, तो मैं वहीं जाता हूँ।" इतना कहकर वह फिर प्रयोगशाला में घुस गए। उनकी पत्नी हक्की-बक्की रह गई।

□

आवश्यक जीवन

गुरु रामदास और उनके शिष्य शिवाजी दक्षिण भारत की ओर जा रहे थे। रास्ते में एक नदी आई, जिसका बहाव काफी तेज था। गुरु रामदास ने नदी के बहाव को देखते हुए कहा, "शिवा, नदी को पहले मै पार करूँगा।"

"नहीं गुरुजी, नदी मैं पार करूँगा।" शिवाजी ने गुरु जी की आज्ञा न मानकर कहा।

यह हठ देखते हुए उन्होंने शिवाजी को पहले नदी पार करने की आज्ञा दे दी।

दोनों ने सकुशल नदी पार कर ली, तो गुरुजी बोले, "आज तुमने पहली बार मेरी आज्ञा नहीं मानी ।"

शिवाजी ने उत्तर दिया, "गुरुजी, मैं आपको अनजानी नदी में कैसे पहले जाने देता ? यदि आप बह जाते तो ?"

यह सुनकर गुरुजी ने प्यार से कहा, "अगर तुम ही बह जाते तो ?"

शिवाजी ने कहा, "मेरे जीवन की अपेक्षा आपका जीवन राज्य के लिए ज्यादा महत्त्वपूर्ण है । मेरे बह जाने से कोई नुकसान नहीं होता, क्योंकि आप कई शिवा तैयार कर लेते । यदि आप बह जाते, तो मैं एक भी समर्थ शिष्य तैयार नहीं कर पाता ।"

□

आपके दर्शन

पं० जवाहरलाल नेहरू को समय नष्ट करने वाले और चापलूसी करने वाले लोग सख्त नापसंद थे । एक दिन सुबह पाँच बजे वह रोजाना की तरह अपनी दाढ़ी बना रहे थे, तभी एक गाँव के नेता उनसे मिलने पहुँच गए । उन्हें देखकर नेहरू जी ने गंभीरता से पूछा, "कहिए, कैसे आना हुआ ?"

ग्रामीण नेता सकपका गया और फिर हिम्मत जुटाकर बोला, "आपके दर्शन करने चला आया ।"

उसकी इतनी बात सुनकर नेहरू जी को गुस्सा आ गया । अपने साबुन लगे मुँह को उसकी तरफ घुमाकर अजीब भाव-भंगिमा से बोले, "लीजिए, कीजिए दर्शन ।"

नेहरू जी की नाराजगी देखकर ग्रामीण नेता की हालत ही पतली हो गई ।

□

सोने का घड़ा

चाणक्य जितने गुणी और बुद्धिमान थे, उतने ही कुरूप भी । एक दिन चंद्रगुप्त मौर्य ने उनसे मजाक में कह दिया, "प्रधानमंत्री जी, क्या ही अच्छा होता कि आप गुणवान होने के साथ रूपवान भी होते ।"

उनके प्रश्न का उत्तर उनकी रूपवती महारानी ने दिया, "महाराज, रूप तो मृगतृष्णा है । आदमी की पूजा उसके गुणों के कारण होती है । उसके रूप के कारण नहीं ।"

महाराज ने कहा, "कोई उदाहरण दो तो जानें ?"

यह सुनकर चाणक्य ने राजा को दो गिलास पानी पीने के लिए दिए । जब राजा पहला गिलास पी चुके तो उन्होंने दूसरा गिलास भी पीने को कहा । पानी पी चुकने के बाद चाणक्य ने राजा से पूछा, "महाराज, पानी कैसा था ?

राजा ने कहा, "एक गिलास का पानी तो ठीक था, लेकिन दूसरे गिलास का पानी ठंडा तथा सुस्वाद था ।"

तब चाणक्य ने कहा, "महाराज, ठंडा पानी तो साधारण घड़े का था और जो ठीक पानी था, वह सोने के घड़े का था । महाराज, मिट्टी का घड़ा देखने में सोने के घड़े जैसा सुंदर नहीं होता, लेकिन उसमें गुण बहुत हैं । " राजा यह सुनकर मुस्कराने लगे ।

□

उत्थान

पहले ज्योति बा फुले माली का काम किया करते थे । जब उन्हें यह एहसास हुआ कि समाज के पिछड़ेपन की वजह अशिक्षा और अज्ञान है, तो उन्होंने माली का काम छोड़ दिया और समाज के उत्थान में लग गए । इस बात का पता उनके पिताजी को लगा, तो उनके क्रोध का पारावार न रहा । उन्होंने ज्योति बा फुले को घर से निकाल दिया, लेकिन वह विचलित नहीं हुए । उन्होंने समाज के उत्थान का कार्य सुचारु रूप

से किया । इसके लिए ब्रिटिश सरकार ने उनका अभिनंदन किया । जब उनके पिताजी के पास यह खबर पहुँची, तो उन्हें अपने व्यवहार पर काफी दुःख हुआ और वह ज्योति बा फुले के पास रहने लगे ।

□

प्रसन्नता का रहस्य

भगवान् बुद्ध के पास एक बार राजा श्रेणिक आए । उन्हें यह देखकर बड़ी हैरानी हुई कि भिक्षुओं के चेहरे आनंद से दमक रहे थे और एक तरफ बैठे राजकुमारों के चेहरों पर सारी सुविधाओं के बावजूद भी उदासी छाई हुई थी । राजा श्रेणिक ने काफी सोचा कि भिक्षुओं की दिनचर्या काफी कठिन होती है । फिर भी उन्हें यह रहस्य समझ में नहीं आया कि भिक्षुओं के चेहरे इतने खिले हुए क्यों हैं ? राजा को उत्तर न मिला, तो उन्होंने भगवान् बुद्ध से पूछा ।

भगवान् बुद्ध ने कहा, "राजन, मेरे भिक्षुओं ने स्वभाव ही ऐसा बना लिया है कि उन पर कैसी भी मुसीबत क्यों न आए, उनकी मानसिक शांति भंग नहीं होती । वे हर हाल में खुश रहते हैं । ऐसा इसलिए होता है कि वे यह नहीं देखते कि बीते दिनों में क्या हुआ, न वे यह सोचते हैं कि भविष्य में क्या होगा ? उनकी निगाहें वर्तमान पर रहती हैं । आज जो कुछ जिस रूप में है, वे उसे उसी रूप में देखते हैं । उनकी प्रसन्नता का यही रहस्य है ।"

□

तीन सौ पैंसठवाँ दिन

विनोबा भावे जी एक बार पैदल-यात्रा करते हुए जब अजमेर पहुँचे, तो वहाँ उनसे एक अमेरिकी मिला और बोला, "मैं अमेरिका वापस जा रहा हूँ, आपका संदेश चाहता हूँ ।"

विनोबा जी ने कहा, "मैं क्या संदेश दूँ। मैं तो बहुत छोटा-सा आदमी हूँ और तुम्हारा देश काफी बड़ा है।"

लेकिन जब उस अमेरिकी ने काफी जिद की तो विनोबा जी ने कहा, "अपने देश में जाकर तुम लोगों से कहना कि मैं चाहता हूँ कि वे अपने कारखानों में तीन सौ चौंसठ दिन तक खूब हथियार बनाएँ, भयंकर से भयंकर हथियार बनाएँ। तुम्हारे कारखानों में और आदमियों को काम चाहिए। काम नहीं होगा तो बेरोजगारी फैलेगी। इसलिए जितने हथियार बना सको, बनाओ, लेकिन तीन सौ पैंसठवें दिन उन सारे हथियारों को समुद्र में फेंक दो।"

यह सुनकर अमेरिकी हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि विनोबा जी ने जो कुछ कहा था, उसके पीछे सच्चाई छिपी हुई थी। हिंसा, हिंसा को जन्म देती है और हिंसा को हिंसा से नहीं, अहिंसा से दबाया जा सकता है।

□

पहला गिरमिटिया

महात्मा गांधी ने जब दक्षिण अफ्रीका में अपनी वकालत आरंभ की, तो थोड़े दिन बाद ही एक गिरमिटिया मजदूर, जिसका नाम बालसुंदरम् था, बड़ी बुरी हालत में गाधीजी के पास आया। उसके कपड़े फटे हुए थे और सामने के दो दाँत टूटे हुए थे। उसके शरीर पर चोटों के निशान थे। यह देखकर गांधीजी को बहुत दु ख हुआ। उन्होंने एक गोरे डॉक्टर से उसका इलाज करवाया और उसी डॉक्टर से चोट का प्रमाण-पत्र लेकर मजदूर के मालिक के खिलाफ मुकदमा चलाया। मजदूर को उन्होंने जितवा दिया और इसके साथ ही उसके लिए एक नेक मालिक भी ढूँढ़कर दिया। इसके बाद गांधीजी गरीब भारतीय मजदूरों में लोकप्रिय हो गए और उन्हे असहायों के रक्षक के रूप में प्रतिष्ठा मिली।

□

लालच का अंत

सिकंदर जब भारत से बेबीलोन लौट रहा था, तब उसकी मृत्यु हो गई । सेनापति सेल्यूकस उसकी लाश लेकर बेबीलोन पहुँचा । वहाँ की जनता ने जब उसकी मृत्यु का समाचार सुना, तो बहुत दुखी हुई । उनका दुःख देखकर सेल्यूकस ने सिकंदर के गुरु अरस्तू से दुखी जनता को शांत करने के लिए कहा ।

अरस्तू ने कहा, "मैं जानता था, देवताओं के देश भारत पहुँचकर मेरा प्यारा शिष्य सिकंदर हार जाएगा । मैंने उससे कहा था कि वह विश्व-विजय का सपना लेकर भारत कभी न जाए । यदि जाए तो वहाँ के ऋषि-मुनियों और संतों से ज्ञान की संपत्ति लेकर लौटे । वह भारत को लूटने, उस पर कब्जा करने, सोना-चाँदी तथा जवाहरातों का भंडार लाने का विचार त्याग दे, पर उसने मेरी शिक्षा नहीं मानी और उसकी मृत्यु हो गई ।"

□

सहृदयता

देशबंधु चितरंजन दास बचपन से ही दूसरों की भलाई में लगे रहते थे । उनके पिता उन्हें बहुत प्यार करते थे और उन्हें किसी बात की कमी नहीं रहने देते थे । एक बार उन्होंने पिताजी से कुछ रुपए माँगे । वह हैरान रह गए कि ग्यारह साल के बच्चे को पैसे क्यों चाहिए ? फिर भी उन्होंने पूछा, "कितने रुपए चाहिए ?"

उन्होंने कुछ सोचकर कहा, "पिताजी, बस तीन रुपए चाहिए ।"

पिताजी ने जेब से तीन रुपए निकालकर बच्चे को दे दिए । साथ ही नौकर को उसके पीछे लगा दिया कि देखो, वह पैसों का क्या करता है ?

शाम को सेवक ने आकर बताया, "बालक ने तीन रुपयों में से दो रुपए की एक निर्धन सहपाठी के लिए किताबें खरीदीं और एक रुपए के उसे जूते दिलवाए ।"

बेटे की सहृदयता जानकर पिता ने उन्हें गले लगाकर आशीर्वाद दिया

□

दूसरों का सुख

महात्मा गांधी साथियों के साथ रेल से यात्रा कर रहे थे । जिस डिब्बे में गांधीजी बैठे थे, उसकी छत थोड़ी टूटी हुई थी । बरसात का मौसम था । जब बारिश शुरू हुई, तो छत टपकने लगी । पानी गिरता देखकर उनके साथियों ने बापू जी का सामान और कागज सँभालकर एक ओर रख दिए । अगले स्टेशन पर एक साथी गार्ड के पास पहुँचा और डिब्बे की हालत बयान की । गार्ड तुरंत डिब्बे में आया और बोला, "बापू जी, आपके लिए दूसरा डिब्बा खाली करवाने का आदेश दे दिया है । आप उसमें बैठ जाइएगा ।"

"और उस डिब्बे के यात्री कहाँ बैठेंगे ?" गांधीजी ने प्रश्न किया ।

"हमारे पास और कोई डिब्बा नहीं है । इसलिए उस डिब्बे के यात्री इस डिब्बे में बैठ जाएँगे ।" गार्ड ने कहा ।

गार्ड की बात सुनकर बापू बहुत दुःखी हुए और उन्होंने कहा, "मैं सुख से बैठूँ और मेरे लिए सुख से बैठे हुए लोग परेशान हों, यह मेरे लिए लज्जा की बात है । पहले वे सुख से बैठेंगे, तब मैं बैठूँगा । मैं उनके डिब्बे में जाऊँ, ऐसा कभी नहीं हो सकता" । बापू ने कहा । गार्ड ने उनके दृढ़निश्चय को समझ लिया और क्षमा माँगी ।

□

अनेक अर्जुन

महात्मा गांधी सन् 1930 में जेल में थे । साबरमती आश्रम के बच्चे हर हफ्ते उन्हें पत्र लिखा करते । पत्रों में वे अजीब-अजीब प्रश्न पूछते । गांधीजी उनका जवाब संक्षेप में देते ।

एक बार एक बच्चे ने शिकायत लिखी—बापू, आप गीता की चर्चा बहुत करते हैं, लेकिन गीता में अर्जुन बहुत संक्षेप में प्रश्न पूछते थे और श्रीकृष्ण अनेक वाक्यों में उसका जवाब देते थे, किंतु आप हमारे लंबे-लंबे प्रश्नों का जवाब एक ही वाक्य में दे देते हैं ऐसा क्यों ?

गांधीजी ने उत्तर में लिखा—कारण स्पष्ट है। श्रीकृष्ण के पास एक अर्जुन था, जबकि मेरे पास अर्जुनों का पूरा झुंड है। उत्तर लिखते हुए गांधीजी मुस्करा रहे थे।

□

प्रिय व्यक्ति

आइंस्टीन ने भौतिकी के बहुत सारे सिद्धांतों की खोज की। ये सारे सिद्धांत उच्च-स्तरीय गणित पर आधारित हैं। इसलिए आम व्यक्ति के लिए समझना कठिन है।

एक बार कुछ छात्र उनके पास गए और अनुरोध किया कि वे अपने सबसे चर्चित व महत्त्वपूर्ण सिद्धांत 'सापेक्षिता' की कोई सरल व्याख्या बताएँ।

आइंस्टीन ने कहा, "अपने किसी अत्यंत प्रिय व्यक्ति के निकट घंटों बैठकर भी यही लगता है कि अभी तो कुछ ही मिनट हुए हैं। इसके विपरीत किसी अप्रिय व्यक्ति के साथ पाँच मिनट भी एक घंटे जितने लंबे लगते है। यही 'सापेक्षिता' है।"

□

एक बजे का रहस्य

स्वामी रामतीर्थ लाहौर के एक कॉलेज में गणित के प्रोफेसर थे। उनकी कलाई पर घड़ी बँधी हुई थी। जब भी कोई उनसे समय पूछता, तो वह मुस्कराते हुए उत्तर देते, "एक बजा है।"

एक बार उनके श्रद्धालु साथी ने गलत समय बताने पर उनकी घड़ी की ओर देखा। घड़ी में एक नहीं बजा था। 'एक बजा है।' इसका क्या रहस्य है ? वह सोचने लगा।

एक दिन अवसर मिलते ही उसने स्वामी जी से पूछा. "आप हर समय यह क्यों कहते हैं कि एक बजा है ?"

स्वामी जी मुस्कराए और बोले, "जरा गहरे में सोचो, क्या उस एक ही की यह लीला नहीं है । एक ने ही सारा विश्व रचा है । एक ही की लीला सारे विश्व में दृष्टिगोचर हो रही है । वह एक ही है, जिसे पाकर कुछ और पाने की इच्छा नहीं रहती ।"

साथी को 'एक बजा है' का रहस्य समझ में आ चुका था ।

□

ज्ञान का मार्ग

टोलमी सिकंदरिया का राजा था । वह यूक्लिड से ज्यामिति सीख रहा था, लेकिन यह ज्यामिति उसे समझ नहीं आ रही थी । परेशान होकर उसने अपने गुरु यूक्लिड से पूछा, "क्या ज्यामिति सीखने का और कोई सरल तरीका नहीं है ?"

यूक्लिड ने कहा, "राजन, आपके राज्य में जनसाधारण और अमीर वर्ग के लिए अलग-अलग मार्ग हो सकते हैं, किंतु ज्ञान का मार्ग सबके लिए एक-सा ही है ।" यह बात राजा टोलमी को अच्छी तरह समझ में आ गई और वह उसी दिन से ज्यामिति सीखने के लिए कठोर परिश्रम करने लगे ।

□

प्रमाण-पत्र

टॉलस्टॉय प्रसिद्ध दार्शनिक थे । एक बार उनके एक खास मित्र ने एक व्यक्ति को उनके पास भेजा, जिसके पास काफी प्रमाण-पत्र थे, लेकिन टॉलस्टॉय ने उसका चयन न करके किसी अन्य का चयन कर लिया ।

जब यह बात मित्र को पता चली, तो उन्हें काफी बुरा लगा । उन्होंने टॉलस्टॉय से इसका कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया "मित्र चयनित व्यक्ति में अनेक गुण है उसने मेरे कमरे में आने से पहले आज्ञा मांगी मेरे कहने पर हा कुर्सी प

बैठा । उसने पैरों को पायदन से साफ किया । मेरे हर प्रश्न का संतुलित व ठीक ढंग से जवाब दिया । वह किसी तरह की सिफारिश भी नहीं लाया था । जब इतने सारे गुण उसमें थे तो भला फिर किसी प्रमाण-पत्र की क्या जरूरत थी ? अतः मैंने उसे नौकरी दे दी ।" टॉलस्टॉय की बात सुनकर उनका मित्र चुप रह गया ।

□

जटिलता

अल्बर्ट आइंस्टीन एक ही साबुन से नहाने, कपड़े धोने और दाढ़ी बनाने का भी काम चला लेते थे । एक बार किसी ने इसका कारण जानना चाहा, तो उन्होंने कहा, "सीधी-सी बात है । यदि आप साबुन के उपयोग जैसी छोटी-सी बात में भेदभाव करेंगे, तो आपके जीवन के अन्य कार्यों में भी भेदभाव और जटिलता आ जाएगी । मैं अपने जीवन को जटिल नहीं बनाना चाहता ।"

□

लगन

डॉ० राममनोहर लोहिया बहुत ही मेधावी थे । वह अर्थशास्त्र की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए अगस्त, 1929 में बर्लिन विश्वविद्यालय गए । उस समय प्रोफेसर सोम्बर्ट महान् अर्थशास्त्री के रूप में प्रसिद्ध थे । इसलिए लोहिया जी उन्हीं से शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे ।

उन्होंने प्रोफेसर से भेंट की और उन्हें अपनी इच्छा अंग्रेजी भाषा में बताई, क्योंकि प्रोफेसर अपनी मातृभाषा जर्मन में ही शिक्षा देते थे और लोहिया जी को जर्मन आती नहीं थी । उनकी बातें सुनकर प्रोफेसर ने मना कर दिया । उन्होंने कहा कि वह तो सिर्फ जर्मन भाषा के माध्यम से ही पढ़ाएँगे । वह लौटकर भारत आ गए और बड़ी लगन से जर्मन भाषा सीखी फिर नवंबर 1929 में प्रोफेसर सोम्बर्ट से

मिले और उन्होंने फर्राटेदार जर्मन भाषा में बातचीत की। प्रोफेसर उनकी लगन और प्रतिभा से प्रभावित हुए बिना न रह सके और उनको शिक्षा देने का निर्णय कर लिया।

□

कर्तव्यनिष्ठा

विश्वविख्यात पंडित गंगाधर शास्त्री जी के बेटे की मृत्यु हो गई, लेकिन शास्त्री जी ने रोज की तरह ही उस दिन भी अपने विद्यार्थियों को पढ़ाया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। इस तरह उनके विद्यार्थियों को इस दुःख का पता भी नहीं चला। पाठ समाप्त होने पर सहपाठियों ने पंडित जी के बेटे को आवाज लगाई, तो शास्त्री जी ने कहा, "वह अब इतनी दूर चला गया है कि तुम्हारी आवाज वहाँ तक नहीं पहुँच सकती।"

विद्यार्थियों को उनकी इस बात का आशय समझ नहीं आया। जब उन्हें बात पता चली, तो उनकी हैरानी का ठिकाना न रहा। उनमें से एक ने हैरान होकर पूछा, "गुरुजी, आपने इतने दुःख में भी हमें पढ़ाना बंद नहीं किया।"

पंडित जी ने कहा, "बंद कैसे करता ? तुम न जाने कितनी दूर-दूर से आए हो, भला तुम्हारा एक दिन कैसे बर्बाद करता। पुत्र-शोक तो मेरा निजी मामला है, परंतु ज्ञान की आराधना का संबंध तो सबसे है। इसमें विघ्न डालकर तुम्हारा विकास रोक दूँ, क्या यह मेरे लिए उचित है ?"

□

पक्षपात

राम शास्त्री पेशवा के यहाँ दानाध्यक्ष का काम करते थे। वह भाई-भतीजावाद के सख्त खिलाफ थे। एक दिन जब नाना फड़नवीस उनके पास बैठे थे, तब उनके सगे भाई दक्षिणा लेने आ पहुचे उन्हें देखकर नाना फडनवीस न राम शास्त्री स कहा

"आप अपने भाई को कम से कम बीस रुपए दक्षिणा दें ।"

उनकी बात सुनकर राम शास्त्री ने कहा, "नाना जी, मेरे भाई कोई विशेष विद्वान् नहीं हैं । वह अन्य ब्राह्मणों की तरह साधारण व्यक्ति हैं । इसलिए इन्हें भी दो रुपए दक्षिणा ही मिलेगी । दानाध्यक्ष राम शास्त्री के यहाँ परिजन के प्रति किसी प्रकार के विशेष पक्षपात की गुंजाइश नहीं है ।" राम शास्त्री की बात सुनकर नाना फड़नवीस निरुत्तर हो गए और उनके भाई को दो रुपए से ही संतोष करना पड़ा ।

□

क्षमा

एक बार एक शिष्य ने ईसा से पूछा, "प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करे, तो मैं उसे कितनी बार क्षमा करूँ ? क्या मैं उसे सात बार क्षमा कर सकता हूँ ?"

ईसा ने कहा, "मैं नहीं कहता कि सात बार क्षमा करो, बल्कि संभव हो, तो सत्तर गुना सात बार तक । अगर तुम्हारा भाई तुम्हारे विरुद्ध कोई अपराध करता है, तो उसे डाँटो, यदि वह पश्चात्ताप करता है, तो उसे क्षमा कर दो । अगर वह दिन में सात बार तुम्हारे विरुद्ध अपराध करता है और हर बार आकर कहता है कि मुझे खेद है, तो तुम उसे बराबर क्षमा करते जाओ । यदि तुम में से हरेक अपने भाई को हृदय से क्षमा नहीं करेगा, तो हम सबका पिता, जो स्वर्ग में बैठा है, वह भी तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करेगा ।"

□

संकल्प

भगवान् बुद्ध से एक बार उनके एक शिष्य ने पूछा, "भगवन् ! चट्टान से शक्तिशाली क्या होता है ?"

भगवान् बुद्ध ने उत्तर दिया "लोहा वह चट्टान को भी तोड देता है "

"भगवन्, लोहे से अधिक शक्ति किसमें है ?"

"अग्नि में ।" भगवान् ने जवाब दिया ।

"और अग्नि से अधिक बल किसमें है ?"

"पानी में···वह अग्नि को भी बुझा देता है ।"

"भगवन्, कृपा करके बताएँ कि पानी से अधिक शक्ति किसमें है ?"

"संकल्प में···इससे अधिक शक्ति और किसी में भी नहीं है, वत्स ।" कहकर भगवान् बुद्ध मुस्करा पड़े ।

शिष्य यह सुनकर उनके पैरों का स्पर्श करते हुए बोला, "बस, भगवन्, मुझे यही शक्ति प्राप्त करनी है ।"

□

दूसरे का दुःख

भगवान् महावीर जब अपनी आत्मसंयम की साधना में लीन थे, तो उन्हें तंग करने के लिए संगम नामक एक दुष्ट तरह-तरह के कुचक्र रचता था । वह उनकी साधना को भंग करने का कोई भी मौका नहीं छोड़ना चाहता था ।

एक दिन तंग करने के लिए उसने उबलता हुआ दूध भगवान् महावीर के ऊपर डाल दिया, परंतु वह अपनी साधना में लीन रहे, जैसे कुछ हुआ ही न हो । यह देखकर संगम को पछतावा हुआ और वह रो दिया । रोते-रोते वह क्षमा माँगने लगा ।

उसे रोता हुआ देखकर भगवान् महावीर का मन द्रवित हो उठा । उन्होंने कहा, "तात, इन कुकृत्यों का दुष्परिणाम तुम्हारे लिए कितना कष्टकारक है, यही सोचकर मुझे दुःख हो रहा है । दूध से जलने पर जो फफोले हो गए हैं, उन्हें देखकर इतना दुःख नहीं है ।"

□

साहस का फल

थॉमस एडीसन बड़े साहसी थे । वह विपत्ति का सामना डटकर करते थे, एक बार रेल की पटरियों के पास स्टेशन मास्टर का छोटा लड़का खेल रहा था । रेलगाड़ी आ रही थी, इसलिए आसपास के लोगों का ध्यान उसी की तरफ था । एडीसन ने जब बच्चे को देखा, तो बिना समय गँवाए जान जोखिम में डालकर बच्चे को उठा लिया और दूर जा गिरे । अगर थोड़ी-सी भी देर हो जाती, तो बच्चे की जान जा सकती थी ।

जब स्टेशन मास्टर को इस घटना के बारे में ज्ञात हुआ, तो उसने एडीसन को धन्यवाद दिया और कहा, "मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ?"

एडीसन ने कहा, "मैं टेलीग्राफी सीखना चाहता हूँ । क्या आप मुझे सिखा दोगे ?"

स्टेशन मास्टर ने उन्हें कुछ ही दिनों में टेलीग्राफी सिखा दी और इसके बाद उन्हें एक स्टेशन पर टेलीग्राफ ऑपरेटर की नौकरी मिल गई ।

□

सहायता

रोमन सेनापति आर्सेलस ने जब सिसली पर आक्रमण करके वहाँ के बंदरगाह पर कब्जा कर लिया, तो सिसली के राजा ने घबराकर महान् वैज्ञानिक आर्किमिडीज से सहायता माँगी ।

आर्किमिडीज ने उनकी सहायता करने के लिए घिरनी तथा उत्तोलक की मदद से बड़े-बड़े क्रेन बनाए और उनकी मदद से जहाजों को उठा-उठाकर दूर फेंक दिया। जो जहाज क्रेन से नहीं उठाए जा सके, उनमें अवतल दर्पणों की सहायता से सूर्य की किरणों को परावर्तित करके उनमें आग लगा दी । इस प्रकार उन्होंने वैज्ञानिक पद्धति से इस युद्ध को तीन साल तक रोककर राजा की सहायता का वचन निभाया ।

□

मसीहा

एक बार ईसा मसीह घूमते हुए केपर नामक नगर पहुँचे । वहाँ के लोग दुष्ट प्रवृत्ति के थे । जब नगर के प्रतिष्ठित लोग ईसा मसीह के दर्शनों के लिए पहुँचे, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्होंने पूछा, "इतने बड़े नगर में आपको सज्जनों के साथ रहने की जगह न मिली या आपने जानबूझकर इन गंदे लोगों के बीच रहना पसंद किया है ।"

उनकी बात सुनकर ईसा मसीह हँस पड़े और उन्होंने कहा, "वैद्य मरीजों को देखने जाता है या चंगे लोगों को ? ईश्वर का यह पुत्र पीड़ितों और पतितों की सेवा के लिए ही यहाँ आया है । उसका स्थान उन्हीं के बीच तो होगा ।" उनकी यह बात सुनकर सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने अपना सिर झुका लिया ।

□

स्वाभिमान

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी झाँसी में रेलवे ऑफिस में कार्य करते थे । एक दिन किसी बात पर उनकी एक अंग्रेज अफसर से कहा-सुनी हो गई । द्विवेदी जी ने बिना समय गँवाए अपना इस्तीफा दे दिया । अंग्रेज अफसर ने ऐसा सोचा भी नहीं था । इसलिए अफसर और उनके मित्रों ने उन्हें काफी समझाया कि वे अपना इस्तीफा वापस ले लें, लेकिन वह टस से मस नहीं हुए । घर आने पर उन्होंने सारा किस्सा अपनी पत्नी को सुनाया, तो वह बोली, "ठीक ही तो किया । भला थूककर भी कोई चाटता है !" यह सुनकर द्विवेदी जी का स्वाभिमान जाग उठा और उन्होंने इस्तीफा वापस लिया ही नहीं ।

□

सुअवसर

हजरत इब्राहीम की एक बार एक दरवेश (साधु) से मुलाकात हुई और बातों का सिलसिला शुरू हो गया। बातों-बातों में हजरत ने उससे पूछा, "सच्चे दरवेश के क्या लक्षण हैं।"

दरवेश ने कहा "मिला, तो खा लिया और न मिला, तो संतोष कर लिया।"

उनकी बात सुनकर हजरत इब्राहीम ने कहा, "ये तो कुत्ते के लक्षण हैं।"

यह सुनकर दरवेश ने कहा, "तो फिर आप ही बताएँ।"

इब्राहीम ने समझाया, "मिल गया, तो बाँटकर खा लिया और नहीं मिला, तो खुदा की कृपा मानकर प्रसन्न हो गए कि उस दयामय ने उसे तपस्या करने का सुअवसर प्रदान किया है।"

□

बुलंदी

शिवाजी अपने समय के प्रसिद्ध योद्धा थे। वीर होने के साथ-साथ वह नारी का बहुत सम्मान करते थे। एक बार उनके सेनापति भामलेकर मुगल सरदार बहलोल खाँ को पराजित कर उनकी परम सुंदरी बेगम को डोली में बैठाकर शिवाजी के दरबार में पहुँचे। वह मन ही मन सोचकर खुश हो रहे थे कि शिवाजी उनके काम से बहुत खुश होंगे।

शिवाजी ने डोली का परदा उठाया और बेगम को देखकर कहा, "वास्तव में आप बहुत ही सुंदर हैं। मुझे खेद है कि मैंने आपकी कोख से जन्म क्यों नहीं लिया ? मैं भी आपके जैसा ही सुंदर होता, माता, मेरे सेनापति को इस अपराध के लिए क्षमा करें।"

"अल्लाह ताला आपको बुलंदी पर पहुँचाए।" बेगम ने शिवाजी को दिल से दुआ दी।

शिवाजी ने सम्मान सहित बेगम को सरदार बहलोल खाँ के पास वापस पहुँचा दिया।

□

मंत्र-दर्शन

ऋषि विश्वामित्र पहले राजा विश्वरथ के नाम से प्रसिद्ध थे । एक दिन राजा विश्वरथ मुनि अगस्त्य के पास गए । लाख कोशिश करने पर भी विश्वरथ को मंत्रों के दर्शन नहीं हो रहे थे । इसका कारण उन्होंने मुनि अगस्त्य से पूछा । उत्तर देने के लिए मुनि अगस्त्य उनको रात में अपनी कुटी में ले गए और अपना कमंडल अँधेरे में ढूँढ़ने का प्रयत्न करने लगे । उन्हें ऐसा करते देखकर विश्वरथ ने उनसे कहा, "कुटी में प्रकाश करें, तभी कमंडल मिलेगा ।"

मुनि अगस्त्य ने कहा, "विश्वरथ, तुम भी अपने मन को प्रकाशित करो, तभी मंत्र-दर्शन का लाभ मिलेगा ।"

उनकी बात सुनकर राजा विश्वरथ ने अपना राजपाट त्याग दिया और प्रभु-भक्ति करने लगे ।

□

मीठे फल

एक बार महाराजा रणजीत सिंह कहीं जा रहे थे । तभी एक मिट्टी का ढेला बड़ी जोर से उनकी कनपटी पर लगा । सभी लोग सन्न रह गए । ढेला मारने वाले को खोजा गया । थोड़ी ही देर बाद दो सिपाही एक बुढ़िया को लेकर आए । बुढ़िया थर-थर काँप रही थी और बड़ी मुश्किल से अपनी बात कह पा रही थी । महाराजा ने उसे धीरज बँधाया, तो उसने कहा, "महाराज, मैंने अपने बच्चों के लिए अमरूद तोड़ने के लिए ढेला मारा था, लेकिन यह डाली को न लगकर आपको लग गया । अगर डाली को लगता, तो मुझे खाने के लिए अमरूद मिलता ।"

महाराजा रणजीत सिंह ने आदेश दिया कि इनके घर साल-भर का अन्न पहुँचाया जाए और एक हजार रुपए नकद दिए जाएँ ।

एक ने हैरानी से इस उदारता का कारण पूछा, तो उन्होंने मुस्कराते हुए कहा, "पेड़ पत्थर खाकर भी मीठे फल दे सकता है, तो मैं क्या पेड़ से भी गया-गुजरा हूँ ?"

□

दूसरा न ठगा जाए

सत रैदास जूते सीकर अपनी रोजी-रोटी चलाते थे। एक बार संत समागम में भाग लेने गए। वहाँ से जब वह अपनी दुकान पर लौटे, तो उनके शिष्य ने शिकायत के अदाज में कहा, “गऊघाट वाला मुझे जूते सीने के बदले में खोटे सिक्के देने आया था। वह मुझे ठगना चाहता था, लेकिन मैंने उसके जूते सीने से मना कर दिया।”

संत रैदास ने शांत वाणी में कहा, “तुमने उसके जूते क्यों नहीं सीए ? वह तो हमेशा ही मुझे खोटे सिक्के देता है। मैं यह सोचकर उसके जूते सी देता हूँ कि उसे परेशानी न हो और उसके दिए खोटे सिक्के मैं भूमि में गाड़ देता हूँ, ताकि कोई और दूसरा व्यक्ति उसके हाथों ठगा न जाए।”

□

करुणा

गाधीजी करुणा के सागर थे। इंसानों के लिए उनके मन में अपार करुणा भरी थी। एक बार गांधीजी दक्षिण अफ्रीका की जेल में थे। उनका स्वास्थ्य ठीक नही था। इसलिए उनके काम के लिए एक नीग्रो को रखा गया, जो हिंदी नहीं जानता था। जेल अधिकारी उस नीग्रो के माध्यम से उन्हें परेशान करना चाहते थे। एक दिन नीग्रो दर्द से कराहता हुआ गांधीजी के पास पहुँचा। वह हिंदी तो जानता नहीं था, इसलिए उसने इशारे से गांधीजी को बताया कि उसके हाथ में बिच्छू ने काट लिया है।

गांधीजी सारी बात समझकर बोले, “तुम चिंता मत करो, मैं तुम्हें अभी ठीक किए देता हूँ।” और उन्होंने घाव पर मुँह रखकर डंक का विष चूसना शुरू कर दिया। गांधीजी के चूसने के साथ-साथ जहर और पीड़ा कम होती गई। कैदी को आराम मिला। इस घटना के बाद वह नीग्रो गांधीजी का भक्त हो गया।

□

हमदर्द

सत सरयूदास रेलगाड़ी से डाकोर जा रहे थे । गाड़ी में ठसाठस भीड़ थी । संत जी के पास एक हट्टा-कट्टा आदमी बैठा था । वह उन्हें परेशान करने के लिए बार-बार ठोकर मार रहा था । उसका यह व्यवहार देखकर स्वामी जी ने बड़े दयाभाव से कहा, "भाई, लगता है, तुम्हारे पैर में पीड़ा है । तुम अपनी पीड़ा मुझे दिखाने के लिए पैर आगे बढ़ाते हो, फिर संकोचवश पैर पीछे कर लेते हो । मुझे एक बार अपनी सेवा का मौका तो दो । तुम मुझे अपना हमदर्द ही समझो ।" यह कहकर स्वामी जी ने उस व्यक्ति का पैर अपनी गोद में रख लिया और उसे सहलाने लगे । उनका यह व्यवहार देखकर वह व्यक्ति शर्म से पानी-पानी हो गया और उसने स्वामी जी से क्षमा माँगी ।

□

मन

स्वामी रामतीर्थ पहले प्रोफेसर रामतीर्थ थे । उन्होंने इंद्रियों को अपने वश में किया हुआ था । यदि उनकी इंद्रियाँ उनका कहना नहीं मानती थीं, तो वह उन्हें दंड देने से भी नहीं हिचकते थे ।

एक दिन प्रोफेसर रामतीर्थ बाजार गए, वहाँ तरह-तरह के फल थे । लाल-लाल सेब देखकर उनकी जीभ में पानी आ रहा था । वह सेब का स्वाद लेने का हठ कर रही थी । मन उसको बार-बार समझा रहा था कि यह ठीक नहीं है । अपनी जीभ को दंड देने के लिए प्रोफेसर रामतीर्थ ने सेब खरीद लिए और उन्हें मेज पर रख दिया । जीभ उन्हें देखकर ललचाती रही, लेकिन उसे खाने के लिए एक भी सेब नहीं मिला । सेब रखे-रखे सड़ गए तो प्रोफेसर ने उन्हें फेंक दिया । यह देखकर जीभ ने मन से कहा, "मैं अब कभी हठ नहीं करूँगी ।"

□

आनंद

स्वामी रामतीर्थ एक बार अमेरिका में प्रवचन दे रहे थे । उनके प्रवचन से प्रभावित होकर एक अमेरिकन महिला, जिसका पुत्र भगवान् को प्यारा हो गया था, स्वामी जी से मिलने आई । उसने स्वामी जी से कहा, "स्वामी जी, मुझे आनंद चाहिए । मेरे पास काफी धन-दौलत है । मैं आपको मुँह-माँगी दौलत देने को तैयार हूँ, पर मुझे आनद चाहिए ।"

"बहन, मैं धन-दौलत का क्या करूँगा, लेकिन तुम्हें आनंद मिल सकता है ।"

"कैसे स्वामी जी ?" उसने पूछा ।

स्वामी जी ने एक नीग्रो बच्चे की तरफ इशारा करके कहा, "बहन, इस बच्चे को अपने बच्चे की तरह ही पालो । देखो, तुम्हें कितना आनंद मिलता है ।"

उस महिला ने स्वामी जी से कहा, "मैं इस बच्चे को माँ का प्यार दूँगी ।"

□

स्पष्टवादिता

गोपालकृष्ण गोखले चौथी कक्षा में थे । गणित की परीक्षा थी । उन्होंने प्रश्न-पत्र के सारे प्रश्न तो हल कर लिए, लेकिन एक प्रश्न पर आकर उनकी गाड़ी अटक गई । उनके साथी ने उन्हें प्रश्न हल करने में संकेत से उनकी मदद की । जब अध्यापक ने कापियाँ जाँचीं, तो केवल गोखले के ही सभी उत्तर सही थे ।

अध्यापक ने उन्हें शाबाशी देकर एक पुस्तक उन्हें पुरस्कार के रूप में देनी चाही । यह देखकर गोपाल खुश होने के बजाय रो पड़े । अध्यापक ने कारण जानना चाहा, तो उन्होंने कहा, "मैंने एक प्रश्न हल करने में अपने साथी की मदद ली है । आप मुझे पुरस्कार नहीं, दंड दीजिए ।

यह सुनकर अध्यापक ने उनसे कहा, "यह पुरस्कार अब तक तो तुम्हारी योग्यता के लिए दिया जा रहा था, लेकिन अब यह तुम्हारी स्पष्टवादिता के लिए देता हूँ ।"

□

दलील

लिंकन अमेरिका के राष्ट्रपति थे । उनकी बुराइयों से विरोधी अखबार भरे रहते थे, लेकिन वह कभी भी इससे विचलित नहीं हुए ।

एक बार उनके मित्र ने उनसे शिकायत की, "विरोधी लोग आपके बारे में चाहे कितनी ही ऊलजलूल बातें अखबारों में प्रकाशित कराते रहते हैं । आपको कम से कम उन्हें जवाब तो देना चाहिए ।"

मित्र की बात सुनकर लिंकन ने कहा, "यदि मैं अपनी आलोचनाओं का उत्तर देने लगूँगा, तो दिन-भर मैं यही काम करता रहूँगा । इसके सिवाय मेरे कार्यालय मे और कोई कार्य नहीं हो पाएगा । मेरा तो बस एक ही उद्देश्य है, अपनी सारी योग्यता और शक्ति का उपयोग करते हुए ईमानदारी से अपना काम करना । वही मै करता हूँ और इस पद पर रहने की अंतिम घड़ियों तक करता रहूँगा ।" उनकी यह दलील सुनकर उनका मित्र निरुत्तर हो गया ।

□

आकर्षण

बायरन इंग्लैड के विख्यात कवि थे । एक बार वह जेनेवा में स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे । एक दिन उनके बचपन के मित्र उनसे मिलने आ पहुँचे । मित्र को देखकर उनके हर्ष का पारावार न रहा । उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से उनका स्वागत किया । शाम को वह अपने मित्र को वहाँ का प्रमुख पार्क भी दिखाने ले गए ।

पार्क की घास काफी मुलायम थी । जब उनके मित्र घास को निहार रहे थे, तो बायरन ठिठककर रुक गए और बोले, "यार, बचपन में तुम मेरी लँगड़ी टाँग के लिए चिढ़ाया करते थे और अब भी मेरी टाँग की तरफ ही देख रहे हो ।"

उनके मित्र ठहाकर हँस पड़े और बोले, "तब की बात छोड़ो । तब तो तुम्हारा आकर्षण लँगड़ी टाँग ही था, लेकिन अब तो तुम जबरदस्त प्रतिभावान हो । अब ऐसा कौन मूर्ख होगा, जो तुम्हारे विशाल मस्तिष्क को छोड़कर टाँगें देखने की जेहमत उठाएगा ।"

□

कोमल बनो

कन्फ्यूशियस चीन के महान् विचारक थे । जब उनका अंत समय आया, तो उनके शिष्यों ने उनसे उपदेश देने का अनुरोध किया । उनकी बातें सुनकर कन्फ्यूशियस ने मुँह खोला और शिष्यों से कहा, "इसमें देखकर बताओ कि तुम्हें क्या दिखाई देता है ?"

शिष्यों ने कहा, "नहीं, हमें कुछ नहीं दिखाई देता ।"

"मेरे मुँह में दाँत हैं ?" उन्होंने पूछा ।

"जी नहीं ।" शिष्यों ने कहा ।

"जीभ है ?"

"जी हाँ, जीभ तो है ।" उत्तर मिला ।

"दाँत कठोर होते हैं, इसीलिए जल्दी नष्ट हो जाते है और जीभ कोमल होती है, इसीलिए कभी नष्ट नहीं होती । इसलिए जीवन में कोमल बनो, कठोर नहीं ।"

□

समर्पण

गांधीजी के मन में माता-पिता और देश के लिए अपना सब कुछ समर्पित करने की भावना कूट-कूटकर भरी थी ।

जब वह छोटे थे, तब एक अध्यापक ने सभी से एक प्रश्न पूछा, "तुम अपने माता-पिता के साथ कहीं जा रहे हो और रास्ते में तुम्हें शेर मिल जाए, तो तुम क्या करोगे ?"

सभी ने अपने-अपने ढंग से उत्तर दिए, लेकिन एक बच्चे का उत्तर सुनकर हैरानी से उनकी आँखें फैल गईं ।

उस बच्चे ने कहा, "मैं शेर से कहूँगा कि वह मुझे खा जाए, पर मेरे माता-पिता को छोड़ दे ।" यही बालक आगे चलकर महात्मा गांधी के रूप में सर्वप्रिय बन गया ।

□

साधना

डिमास्थनीज प्रसिद्ध वक्ता थे, लेकिन वह बचपन में बोलते हुए हकलाने के साथ-साथ तुतलाते भी थे ।

एक दिन उन्होंने अपने नगर की सभा में एक प्रसिद्ध वक्ता का भाषण सुना और मन ही मन दृढ़ निश्चय किया कि चाहे उन्हें कुछ भी करना पड़े, वह भी सफल वक्ता बनकर रहेंगे । यह निश्चय लेकर उन्होंने अपनी दिनचर्या ही बदल दी । उन्होंने सागर के तट पर जाकर उनकी लहरों को अपना श्रोता मान जोर-जोर से भाषण देने का अभ्यास शुरू किया । उनकी साधना रंग लाई और हकलाना-तुतलाना सभी कुछ छूट गया और वह एक प्रसिद्ध वक्ता के रूप में जनता के सामने उभरकर आए ।

□

सादगी

न्यूटन का जब अंतिम समय आ पहुँचा, तो उनसे मिलने आए मित्रों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा, "दोस्तो, अब तो चलने की तैयारी है ।"

उनकी यह बात सुनकर भारी मन से दोस्तों ने कहा, "आपके लिए और हमारे लिए यह गर्व की बात है कि आपने प्रकृति के रहस्यों को सुलझाया है । आप अपने काम में सफल रहे ।"

यह सुनकर न्यूटन ने कहा, "इसमें गर्व की कोई बात नहीं है । जिस प्रकार समुद्र तट पर खेलते हुए किसी बच्चे को कुछ चमकदार पत्थर और सीप मिल जाती है, उसी प्रकार मुझे भी थोड़ी सफलता मिल गई, वरना मैं भी प्रकृति के रहस्यों को सुलझाने में नितांत असफल ही हूँ ।"

□

भय

कन्फ्यूशियस को घूमने का बहुत चाव था। एक बार वह घूमते हुए किसी देश में पहुँचे। वहाँ के राजा ने उनका आतिथ्य सत्कार किया। कन्फ्यूशियस दरबार में उपस्थित थे, तभी एक दरबारी हाथों में तीन पिंजरे लेकर आया। एक पिंजरे में चूहा, दूसरे में बिल्ली और तीसरे में बाज था। पिंजरों में उनके खाने-पीने का सामान भी रखा हुआ था, लेकिन कोई भी नहीं खा रहा था। वे केवल एक-दूसरे को ही देख रहे थे।

राजा ने इसका उत्तर कन्फ्यूशियस से जानना चाहा, तो उन्होंने कहा, "राजा, ये तीनों जीव भयग्रस्त है, इसलिए कुछ भी नहीं खा रहे हैं। चूहे को बिल्ली से भय है, बिल्ली को बाज से। बाज इस बात से भयभीत है कि अगर वह खाना खाएगा, तो ये दोनों कहीं बचकर निकल न जाएँ। भय आदमी को लाचार बना देता है। अतः राजन, किसी को भयभीत मत करो।" उनका यह उत्तर सुनकर राजा बहुत ही खुश हुआ।

□□

कुछ प्रसंग

किसकी रोटी

स्वामी दयानंद सरस्वती एक बार किसी सभा को संबोधित कर रहे थे । सभा में अधिकांश कट्टरपंथी ब्राह्मण थे । सभी ध्यानपूर्वक उनकी बातें सुन रहे थे । तभी एक नाई, जो स्वामी जी का परम भक्त था, भोजन की थाली लेकर आया और स्वामी जी के सामने श्रद्धापूर्वक रख दी । स्वामी जी सबके सामने भोजन करने लगे । यह देखकर श्रोतागण हैरान होकर बोले, "यह क्या स्वामी जी, आप नाई की रोटी खा रहे हैं ?"

स्वामी जी ने मुस्कराते हुए जवाब दिया, "मेरे भाई, यह नाई की रोटी नहीं, गेहूँ की है । किसी के हाथ का स्पर्श मात्र होने से अन्न पवित्र या अपवित्र नहीं हो जाता ।"

एक रुपया

विख्यात समाज-सुधारक ईश्वरचंद्र विद्यासागर कहीं जा रहे थे । एक बालक आया और बोला, "एक पैसा दे दो ।" विद्यासागर बोले, "अगर मैं तुम्हें एक पैसे की जगह एक रुपया दूँ, तो क्या करोगे ?" बालक ने कहा, "फिर मैं भीख नहीं माँगूँगा ।" विद्यासागर ने उसे एक रुपया दे दिया ।

कई वर्ष बाद विद्यासागर बाजार में घूम रहे थे, तो एक युवक ने उन्हें प्रणाम किया और कहा, "मैं वही हूँ, जिसे आपने एक रुपया दिया था । उससे मैंने फलों का धंधा शुरू किया और आज मेरी इसी बाजार में दुकान है । आप उसे अपनी चरण-धूलि से पवित्र करें ।"

वफादारी

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचंद्र बसु के पिता भगवानचंद्र बसु डिप्टी मजिस्ट्रेट थे । उन्होंने अपने कार्यकाल में कई चोरों और डाकुओं को जेल भेजा था । एक बार एक डाकू जेल से छूटकर उनके पास आया और काम माँगने लगा ।

घर के सभी लोग डाकू को काम देने के खिलाफ थे, परंतु उन्होंने उस पर भरोसा कर उसे जगदीशचंद्र बसु को पाठशाला ले जाने और वापस लाने का काम सौंप दिया । उस डाकू ने भी उनके भरोसे को टूटने नहीं दिया और हमेशा पूरी वफादारी से काम किया